आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर. / 2000 / 2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र. / भोपाल / 44 / 2021–23
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" अप्रैल 2022

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 40
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

| वर्ष –23 | अंक–04 | चैत्र/बैशाख मास | अप्रैल 2022

शुभ रामनवमी

श्री रघुवीर भक्त हितकारी।
सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥
निशि दिन ध्यान धरै जो कोई।
ता सम भक्त और नहिं होई॥

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुख-पत्र

Paying Homage On Her

1st Death Anniversary.

Beloved Wife, Mother, Nani, Sister & Friend.
Her Dignity, Courage, Charm And
Compassion Has Inspired Many
And Given Strength To Us All.
Her Presence Is Eternal In Our Hearts.

VINEETA CHATURVEDI

14/04/1961 To 21/04/2021

W/o: **MANOJ CHATURVEDI**
Daughter And Son In Law :
Ritika And Arjun
Grandson : Rudraveer
Daughter : Sheena
And Rest Of The Deeply
Grieved Chaturvedi Family.

(र.क्र. 2022/945)

हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

वरूण चतुर्वेदी

चि. वरूण चतुर्वेदी पुत्र डॉ. मीनाक्ष व डॉ. अंजना चतुर्वेदी ने सन् 2014 में बी.टेक (सिविल) आई.आई.टी.दिल्ली से पास की।

सन् 2019 में यूपीएससी सिविल सर्विस (भारतीय प्रशासनिक सेवा) में चयनित होकर रेल्वे में IRPS ज्वाइन की। वरूण ने GMAT में 740/800 अंक प्राप्त किए। साथ ही CFA Level-I पास की।

आयुषी चतुर्वेदी

कु. आयुषी चतुर्वेदी पुत्र डॉ. मीनाक्ष व डॉ. अंजना चतुर्वेदी ने MBBS की पढ़ाई 70% अंकों के साथ जबलपुर मेडीकल यूनिवर्सिटी से पास की। साथ ही आयुषी के गायनी व आब्सट्रेटिक्स में आनर्स लाने पर मेडीकल कॉलेज द्वारा सम्मानित किया गया।

हम दोनों के उज्जवल भविष्य की शुभकामना करते हैं।

चतुर्वेदी मैटरनिटी एण्ड जनरल हॉस्पिटल प्रा.लि.

1, लाला लाजपतराय कॉलानी, रायसेन रोड, भोपाल (म.प्र.), मो. 9826023188, 9826628188

(र.क्र. 2022/923)

मेरी छोटी भाभी **नमिता चतुर्वेदी** को

"अश्रुपूरित श्रद्धाँजलि"

प्रथम पुण्य तिथि पर 1 अप्रैल 2022

स्व० श्रीमती नमिता चतुर्वेदी (नीति)

(ससुराल-फरौली, मायका-मैनपुरी)
पति-दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली, कासगंज), मो.: 9411931955
(अल्पायु में चिर विदाई)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

"तुम हॉलाकि शारीरिक रूप से तो संसार से विदा हो गईं
परन्तु तुम्हारी यादें आज भी हमारे दिल में जीवित हैं और हमेशा रहेंगी॥"
"रो पडती हैं आँखे हमारी देखकर तस्वीर उसकी, जिन्दगी ऐसी जी कि मौत भी शर्मा गई।
जिन्दगी जी छोटी, लेकिन शानदार जी, हर जगह सुगन्ध फैलाकर स्मृति सबके दिल में रख गई॥
सद्भावना, स्नेह, सौम्यता जिसका स्वभाव था, सहजता और उदारता जिसके गुण थे।
ईश्वर ऐसी दिव्य आत्मा को शान्ति दे, इसी प्रार्थना के साथ शत् शत् नमन॥"

मेरी प्यारी मामी❤️

स्व० नीति चतुर्वेदी

ममता की मूरत थीं
सही गलत समझाती थीं
हर प्रकार का व्यंजन
हमें चाव से खिलाती थीं

उस भोले से चेहरे पर,
सदा मुस्कान रहती थी
नीले रंग की साड़ी उनपर क्या खूब ही लगती थी
ना कोई भेद भाव, ना किसी से गिला शिकवा था
सभी से परस्पर प्रेम, यही उनका सौन्दर्य था

छोटा हो या बड़ा सभी के लिए आदर उनके मन मे था,
ऐसा कोई कार्य नहीं जो उन्हें नहीं आता था
धीमे से उन स्वरों में, सलीका झलकता था
उस प्यारी सी आवाज़ को सुनकर चेहरा खिल जाता था

सोचा ना था कि वो आवाज़ दुबारा ना सुन पाएंगे
जाएंगे तो वापिस ननिहाल पर उन्हें ना देख पाएंगे
उनके जाने की पीड़ा हमेशा ही मन में होगी
वह हमारे दिलों मे सदा बहार सी रहेंगी...🙏 ...दिव्याँशी

शोकाकुल परिवार

श्रीमती विभा चतुर्वेदी
(फरौली, कानपुर)
'ननद'
अदिति, दिव्यांशी (भांजियाँ)

संजीव चतुर्वेदी (अनीश)
'ननदोई'
(मैनपुरी, कानपुर)

ससुराल पक्ष
ननदें - ननदोई, जेठ - जेठानी
देवर - देवरानी, भतीजे - भतीजी
भान्जे - भान्जी
एवं समस्त परिवारीजन व शुभचिन्तक

मायका पक्ष
माँ
भ्रातागण एवं भाभियाँ
भतीजा व समस्त परिवारीजन

"संजीव चतुर्वेदी"
128/131, एच-ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर
मो.: 9415919974, 7983193779

(र.क्र. 2022/930)

अंक 04
अप्रैल 2022, वर्ष - 23

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	**6**
संपादकीय	**7**
कुलदेवी श्री चर्चिका देवी	**9**
नवरात्रि और जवारे	**11**
नारी का सम्मान ही संस्कृति का उत्थान है	**12**
लांगुरिया	**13**
संपादक के नाम पत्र	**22**
मैथी-बहुपयोगी औषधि	**24**
यमपुरी में हड़कंप	**25**
शाखा समाचार	**31**
होली संगम	**34**
समाज समाचार	**35**
शोक समाचार	**36**

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

दिनाँक 2 अप्रैल 2022 भारतीय हिंदू नव वर्ष विक्रम संवत 2079 गुड़ी पड़वा के दिन से आरंभ हो गया है। इसी दिन चैत्र नवरात्रि आरंभ हो गए है। माँ की उपासना व आराधना के यह 9 दिन अपने आपको मानसिक रूप से शुद्ध,शांत व सशक्त करने के होते हैं। यह पर्व हमारे देश व समाज में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु की आरंभ का यह उपासना पर्व मौसम में अपनी उष्णता के कारण कठिन होता है। इस वर्ष होली के अवसर पर भदावर के सभी ग्रामों होलीपुरा, पुरा, तालगांव में होली की रौनक पुनः देखने को मिली। वही पुरानी रौनक व परंपराएं संपूर्ण होती दिखी। महासभा के शताब्दी वर्ष के अवसर पर पूर्णिमा दिनाँक 17 मार्च 2022 को पुरा कन्हैरा ग्राम में ग्राम वासियों द्वारा समाज के कुछ समाज सेवियों को सम्मानित किया गया। जिनमें मेरे साथ महासभा के संरक्षक डॉ. सतीश चतुर्वेदी, पूर्व सभापति भरत जी, संरक्षक त्रिभुवन जी, महिला प्रकोष्ठ संयोजक ऊषा जी, आभा जी (नागपुर), भाई भरत जी (सहसचिव), शशांक जी (संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका), महेश जी (कोषाध्यक्ष), ज्ञानेंद्रजी (सहसचिव) को सम्मानित किया गया। इसी के साथ हमारी होली गायन व वादन की परंपरा को सहेजकर रखने हेतु पुरा से हेमंत जी, ज्ञानेश जी, सौरभ जी व चंद्रकांत जी, होलीपुरा से अशोक जी, राकेश जी व मनीष जी व तालगाँव से गोकर्ण जी व प्रवेश जी को भी सम्मानित किया गया। भदावर में होली गायन का वह पुराना जोश, उमंग, तरंग, उल्लास व इंद्रधनुषी रंगीन छटा युक्त प्रेम भाव पुनः देखने को मिला। सूर्य देव की अधिकतम उष्णता के बावजूद सभी कार्यक्रम सकुशल संपन्न हुए।

पुरा के भव्य कार्यक्रम के साथ साथ तालगांव व होलीपुरा में भी होली का कार्यक्रम बहुत धूमधाम व भव्यता के साथ संपन्न हुआ। होलीपुरा के कार्यक्रम में महासभा के संरक्षक सतीश जी (नागपुर) व त्रिभुवन जी (दिल्ली) सपरिवार के साथ बड़ी संख्या में बंधुओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। होली मिलन गायन व ढोलक की थाप सारे दिन गूँजती रही। संपूर्ण कार्यक्रम बहुत धूमधाम व भव्यता के साथ संपन्न हुआ।

आप सभी के सहयोग व आशीर्वाद से इस वित्तीय वर्ष में अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत रुपये 11,55,478/- एवं गुल्लक योजना के अंतर्गत कुल रुपये 76,676/- एकत्र हुए। मैं इस सहयोग हेतु सभी समाजसेवी दानदाताओं का आभार व्यक्त करता हूँ। पुरा कार्यक्रम के दौरान डॉ. प्रदीप जी ने बताया की कोरोना काल के कारण गुल्लक सभी व्यक्तियों तक नहीं पहुंच सकी है, इसलिए मैं यहां पर कुछ गुल्लक छोड़े जा रहा हूँ। जिस किसी को भी आवश्यकता हो वह हमसे संपर्क कर प्राप्त कर सकता है। होली की पूर्णिमा के उपरांत बाबा बटेश्वर नाथ के दर्शन लाभ का पुण्य अवसर भी प्राप्त हुआ।

महासभा के शताब्दी वर्ष के इतिहास का कार्य भाई भरत जी (रिषड़ा) के नेतृत्व में संपूर्ण हो चुका है।

नव संवत्सर व रामनवमीं की हार्दिक शुभकामनाएं।

संपादकीय

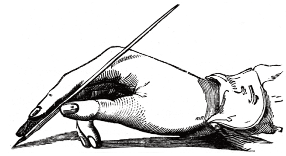

बंधुवर सादर पालागन,

विगत अंक में हमने पत्रिका में कुछ नयापन लाने के उद्देश्य एक रचनात्मक प्रयास किया। जिसकी समाज में चारों और सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। स्वाभाविक सी बात है कुछ नया कार्य करेंगे, तो गलतियां अवश्य होंगी। हमारी जानकारी में जितने होली गायक आये। आपके व समाज के समक्ष प्रस्तुत किये। यह हमारा प्रथम प्रयास है। निःसन्देह यह पूर्ण नही है। यह एक सतत प्रक्रिया है। इसमें हमारा प्रयास सिर्फ समाज की प्रतिभाओं को आपके समक्ष लाने मात्र का था। अनजाने में व जानकारी के अभाव में त्रुटियाँ हुई। इसके साथ ही प्रकाशन में हमारी स्थान की सीमाएं व बाध्यताऐं भी है। मानव त्रुटियों का पुतला है। भविष्य में आप हम आपके द्वारा उपलब्ध जानकारी को एकत्र कर प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे, एवम आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। भविष्य में आपके द्वारा जितनी जानकारी प्राप्त होगी उसे हम आगे भी जोड़ने का प्रयास करेंगे।

होली व होली मिलन के कार्यक्रमों में युवाओं की एकल प्रस्तुतियां व उनका उनकी प्रतिभा देखकर मन प्रफुल्लित हुआ। समाज के नवोदित कलाकार चि. नमित (रिषड़ा), चि. समर्थ (मैनपुरी), चि. विनायक (कोलकाता), चि. हर्षित (मैनपुरी) के गायन की प्रतिभा व शैली ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। होली के अवसर पर मैनपुरी व होलीपुरा की तो बात ही अलग है। इस वर्ष मैनपुरी की होलियों का आनंद वीडियो के माध्यम से मिला। इस वर्ष युवाओं में होली गायन की प्रतिभा को करीब से देखने का अवसर मिला। समाज की होली गायन की परंपरा हमारे समाज के युवाओं के हाथों में सुरक्षित है। ऐसा मैनपुरी, होलीपुरा, पुरा,तालगांव, चंद्रपुर, फरौली आदि के युवाओं की प्रतिभा व जोश को देखकर महसूस हुआ। यह हमारे लिए बहुत हर्ष का विषय है। अलग अलग शैलियों के ये फ़नकार जब सुर लगाते है तो प्रभु भी मन्त्र मुग्ध खिंचे चले आते है।

महासभा के शताब्दी वर्ष कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 17 मार्च 2022 को ग्राम पुरा के होली मिलन कार्यक्रम में पुरा ग्राम के बंधुओं द्वारा मेरी सेवाओं को सम्मानित किया गया। यह सम्मान पाकर मैं बहुत उत्साहित व गौरवान्वित हूँ। साथ ही मैं यह महसूस करता हूँ कि मेरी जिम्मेदारियों में और इजाफा हो गया है। हमारे सभापति डॉ. प्रदीप जी के विश्वास पर सदा खरा उतरने का मैं प्रयास करूंगा।

कोरोना की भयानक त्रासदी के उपरांत होली मिलन कार्यक्रमों के आयोजनों से मन उत्साहित है। हम सब एक बार पुनः पूर्व की भांति साथ-साथ है। बच्चों की परीक्षा का समय चल रहा है। उनको मेरा सुझाव है कि धैर्य रखें व संयम से काम लें। ऑनलाइन, ऑफलाइन के दुविधापूर्ण समय के उपरांत मेरा विश्वास है कि आप जरूर विजयी होंगे। अपने आप पर व अपनी मेहनत पर भरोसा रखें।

2 अप्रैल से चैत्र नवरात्र प्रारंभ हो रहे हैं। इसी दिन से हिंदू नव वर्ष अर्थात नव संवत्सर भी प्रारंभ होता है। इस अवसर पर चर्चिका देवी पर आ0 सहदेव गुरु जी (मथुरा) का ज्ञानवर्धक लेख प्रस्तुत है। माँ की आराधना पर्व के अवसर पर आराधना स्वरूप लांगुरिया व माता का यशगान भी प्रस्तुत है। इसी के साथ जवारे रोपित करने की जानकारी भी दी जा रही है।कैलाश जी (कासगंज) का नारी सम्मान पर लेख, सुचित्रा जी (लखनऊ) मैथी की औषधीय गुणवत्ता की जानकारी भी प्रस्तुत है। आशा है आपको यह गुलदस्ता पसंद आएगा ।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। जय माँ!!

- शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका – श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर – शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

कुलदेवी श्री चर्चिका देवी

- **डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी**, साहित्याचार्य, पीएचडी, मथुरा

त्वां एतोष्यन्ति सदा देवी बलि पुष्पोंतकरैः करैः।
चर्चिकेति शुभं नाम मस्माद् रूधिर चर्चिता।।

हे देवी तुम रक्त से लथपथ अर्थात चर्चित हो अतः तुम्हारा नाम चर्चिका होगा ।भगवान श्री शिव ने ही भगवती को यह नाम दिया है। वामन पुराण के सत्तरवे अध्याय में भगवती माँ चर्चिका के प्रकार का वर्णन प्राप्त होता है। इसमें आठ भैरवों की उत्पत्ति भी उनके साथ हुई है ऐसा वर्णन किया गया है। प्रसंग आरंभ होता है देवासुर संग्राम से जब अंधक असुर का अत्याचार अत्यधिक बढ़ गया, तो स्वयं भोले नाथ देव गणों के साथ युद्ध भूमि में पधारे जहां भीषण युद्ध आरंभ हुआ। किंतु समस्या यह थी कि जितने असुर मृत्यु को प्राप्त होते थे। दैत्य गुरु शुक्राचार्य अपनी संजीवनी विद्या का प्रयोग कर उन्हें पुनर्जीवित कर देते थे। जिससे से पुनः युद्ध करने को उपस्थित हो जाते थे। नंदी ने शंकर जी से कहा कि प्रभु मरे हुए लोगों का पुनः जी उठना असंभव होता है, किंतु भार्गव शुक्राचार्य ने अपनी संजीवनी विद्या कारण पुनः जीवित कर दिया है। देवताओं के सभी प्रयत्न जब विफल होने लगे हैं तब शिव जी ने कहा हे गणपति! तुम जाओ और शुक्राचार्य को मेरे पास लेकर आओ। मैं योग क्रिया से उन्हें संयमित कर दूंगा। नंदी गए और भीषण युद्ध के बाद जैसे-तैसे शुक्राचार्य को लेकर शिवजी के समक्ष उपस्थित हुए। जिन्हें देखते ही शिव जी ने अपना मुंह खोल कर उन्हें अपने उदर में पहुंचा दिया। शुक्राचार्य भी परम शिव भक्त थे वे वहीं स्थित होकर शिवजी की स्तुति करने लगे।

त्रिनयन हर भव शंकर उमापते जीयूतकेतो,
गुहाग्रह श्मशान निरत भूति विसेपन शूलपाणे।
पशुपते गोपते तत्पुरुषसत्तम नमो नमस्ते।

अर्थात हे त्रिनयन, हे हर, हे भव, हे शंकर, हे उमापते! हे जीमूतकेतो! हे गुहाग्रह, हे श्मशान निरत,हे भूति विलेपन! हे त्रिशूल धारिन ! हे पशुपते आपको बारंबार नमस्कार है। इस प्रकार स्तुति करते शिव जी के उदर में विचरण करते हुए उन्होंने शिवजी के उदर में चराचर प्राणियों से व्याप्त सारा जगत, समुद्र एवं पाताल, आदित्य, वसु, रुद्र, विवेक देवा, गण, यक्ष, गंधर्व ,मुनि, मनुष्य,

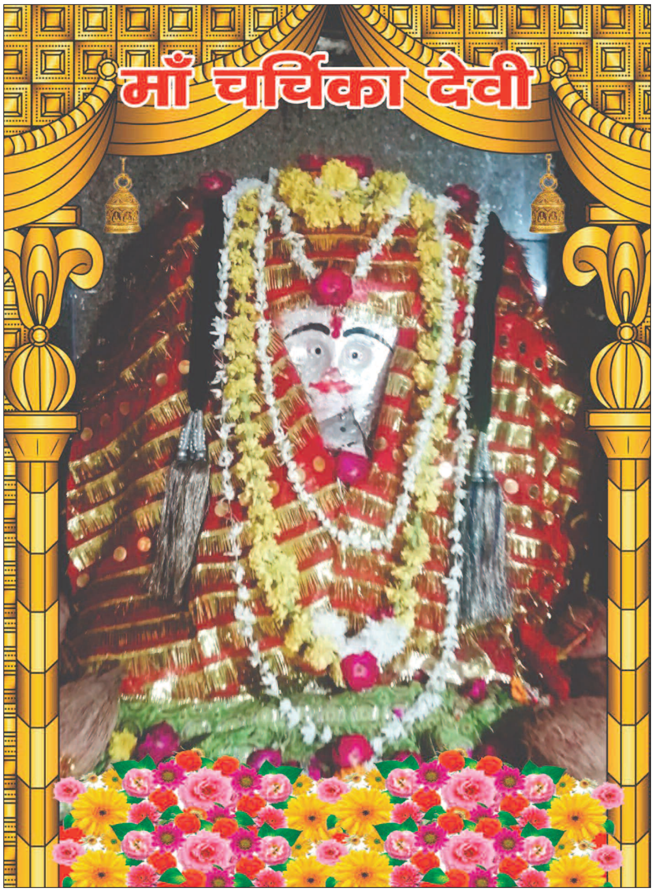

पशु, कीट, वृक्ष, पर्वत, द्विपद, चतुष्पद आदि को देखा। दिव्य एक वर्ष तक समय व्यतीत होने पर परेशान हो उन्होंने भगवान की स्तुति प्रारंभ की :

विश्वरूप महारूप विश्वरूपाक्ष सूत्र धृक ।
सहस्त्राक्ष महादेव त्वामहै शरणंगतः।।

अर्थात हे विश्वरूप ! हे महारूप ! हे विश्वरूपाक्ष! हे सूत्रधारिन्! हे सहस्त्रशास्त्र ! हे महादेव मैं आपकी शरण में हूँ। मैं आपके उदर में सभी भुवनों को देखते- देखते थक गया। मैं आपकी शरण में हूं। शिवजी बोले -हे भार्गववंशीय चंद्र तुम मेरे उदर में जाकर मेरे पुत्र हो गए हो अतः तुम मेरे शिश्न से बाहर आओ। ऐसा कह उन्होने शुक्राचार्य को अपने शिश्न मार्ग से मुक्त कर दिया। शुक्राचार्य भगवान को प्रणाम कर चले गए।

शुक्राचार्य के मुक्त होते ही युद्ध पुनः भीषण रूप से आरंभ हो गया। शंभू नामक दैत्य ब्रह्मा से, कुम्भज विष्णु से, शाल्व सूर्य से, मिशिरा वरुण से, द्विमूर्धा

पवन से, राहू सोम से एवं विरुप घृक से युद्ध करने लगा।

विधुन्माली नामक महाअसुर ने अकेले ही एकादश रूद्र से उठकर मुकाबला किया। आठ दिव्य वर्ष तक यह महाभीषण युद्ध चला। अपनी विजय ना होते देख असुरों ने माया का सहारा लेकर देवताओं को निगलना प्रारम्भ कर दिया।

अचानक देव गणों को लुप्त होता देख शिव जी ने क्रोध से जृम्भायिका को उत्पन्न किया। उसके स्पर्श करने पर दानव अस्त्रों का त्याग कर जंभाई लेने लगे तथा अपना मुख फाड़ने लगे जिससे सभी देवगण उनके देह से बाहर निकल आए। और फिर भयानक युद्ध हुआ। जिसमें दानव हारने लगे। अपने को पराजित होते देख अंधक एवं उसका सेनापति सुन्द चुपचाप युद्धभूमि से बाहर निकले और अंधक ने शिव का तथा सुन्द ने नन्दी का वेश धारण कर मन्दरगिरि पर जहां पार्वती स्थिर भी थी, पहुँचे। उन्हें आया देख पार्वती ने विचारा कि शिव लंबे समय से युद्ध करके निश्चित ही आहत हुए होंगे ऐसा सोच उनके शरीर पर लेप लगाने के विचार से जैसे ही उनके समीप आयी शंकर जी के शरीर के चिन्हों को ना देख वे पहचान गई कि ये मायावी हैं। अंन्धक भी भेद

खुलते ही वहां से निकल कर वापस युद्ध भूमि में आ गया। इधर भीषण युद्ध में भगवान विष्णु, ब्रह्मा एवं इंद्र ने अनेक बड़े असुरों को मार गिराया। जिससे दानवों में हाहाकार मच गया ।

अब शुक्राचार्य के मना करने पर भी अंधक ने पुनः युद्ध आरंभ किया तथा अपने युद्ध कौशल से देवताओं को वाण वर्षा कर भयाक्रांत कर दिया। उसके प्रहार से देवगण घायल होने लगे। यह देख शिव ने सभी देवताओं को अपने शरीर में छुपा लिया और वे स्वयं अंधक से युद्ध करने लगे। शिव ने अपने त्रिशूल से उस पर भीषण प्रहार किया, किंतु वह इस प्रहार को सहकर भी एक कोस तक शिव को खींच ले गया और उन पर गदा से प्रहार किया। जिससे उनके शरीर से रक्त प्रवाह होने लगा। इस रक्त से पूर्व दिशा से विधाराज, दक्षिण से कालराज, पश्चिम से कामराज, उत्तर से सोमराज नामक भैरव उत्पन्न हुए। धाव के रक्त के ही भाग से स्वच्छन्दराज पृथ्वी पर गिरे रक्त से ललितराज नामक तथा विध्नराज नामक भैरव उत्पन्न हुए। शिव जी ने मिररस से अंधक की छाती को विदीर्ण कर छाते की तरह उसे उठा लिया जिससे उसका रक्त उनके ऊपर गिरने लगा।

इस कार्य में हुए श्रम से उनके अत्यधिक पसीना भी आने लगा इससे एक कन्या एवं एक बालक उत्पन्न हुआ। यह दोनों ही उस दुष्ट अंधक का रक्त पान करने लगे इसे देखकर भगवान शंकर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे चर्चिका नाम से संबोधित किया। जिसका वर्णन आरम्भ में किया जा चुका है। शिवजी ने कहा कि हे प्रातः कालीन सूर्य के समान क्रांतिवाली कन्या, शुभ कारिणी देवता, ऋषि, पितर, सर्पादि, यक्ष, विद्याधर एवं मानस तुम्हारी पूजा करेंगे। तुम्हारी स्तुति करेंगे। तुम रक्त से लथपथ (चर्चित) हो अतः तुम्हारा नाम चर्चिका होगा। भगवान शंकर के ऐसा कहने पर व्याघचर्म को वस्त्र रूप में धारण करने वाली देवी चर्चिका पृथ्वी पर चारों ओर विचलित हुई। इंगुर के समान रंग वाले पर्वत पर चली गई। भगवान शिव ने इसके बाद अंधक के शरीर के रक्त को अपने नेत्रों की अग्नि से सुखाकर रक्त रहित कर दिया। जिससे वह पाप रहित हो गया और भगवान शिव की स्तुति करने लगा। भगवान प्रसन्न हो गये और उसे जीवनदान देकर अपने गणों में सम्मिलित कर भृग्डी नामक गण बना लिया।

गाँव की ओर

- **डॉ. कुश चतुर्वेदी**, इटावा

चलो हम लौट चलें फिर गाँव
जब से छोड़ा गांव का दामन।
छूट गया सब कुछ मनभावन।।
छूटे खेत और पगडंडी।
लगे हाथ मंगल की मंडी।।
शुद्ध दूध, छाछ और दही।
दादी जो कह दें वह सही।।
कैसे भूलें हम छप्पर की छाँव।
चलो हम लौट चलें फिर गांव।।

नहीं दिखावा सब संतोषी
मुद्दे सुलझे मित्र बरोसी।।
द्वारे पौहे उनकी सेवा।
मूंगफली थी अपनी मेवा।।
गेहूँ से था भरा बरोठा।
पुजता बड़े दाऊ का सोंटा।।
सब आते जहाँ सबके काम।
चलो हम लौट चलें फिर गाँव।।
बने शहरूआ हम भी जब से।

भूले चलन गाँव के तब से।।
अंकल आंटी में सब रिश्ते।
नकलीपन में ही सब घिसते।।
भाव भरी गाँव की बात।
कोरोना को को देंगे मात।।
गाँव हमारा तीरथ धाम।
चलो हम फिर लौट चलें फिर गाँव।।

नवरात्रि और जवारे

- श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल

माता की आराधना का धार्मिक उत्सव वर्ष में दो बार मनाया जाता है। इन 9 दिनों जगत जननी दुर्गा माँ के नौ रूपों की आराधना एवं पूजा की जाती है। भक्तगण नवरात्र में दुर्गा मां के श्रद्धा के कारण व्रत व उपवास भी रखते हैं। माँ की आराधना किसी तपस्या से कम नहीं होती है। भक्तगण विभिन्न प्रकार से व्रत रखकर अपनी श्रद्धा और भक्ति को माँ के चरणों में अर्पण करते हैं। हमारी पौराणिक कथाओं में मान्यता है कि सर्वप्रथम भगवान रामचंद्र जी ने समुद्र के किनारे शारदीय नवरात्र में माँ की आराधना की थी। उसके उपरांत ही सेतु का निर्माण प्रारंभ हुआ था। चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन अर्थात पड़ीवा के को गुड़ीपड़वा भी कहते है। इसी दिन हिन्दू नववर्ष संवत्सर का आरंभ भी होता है। चैत्र मास की नवरात्रि हो अथवा शारदीय नवरात्रि दोनों नवरात्रि में जवारे बोए जाते हैं। जवारे बोने की परंपरा अनादि काल से चली आ रही और भक्तगण दोनों नवरात्रों में जवारे बोते हैं। जवारे को कहीं-कहीं खेत्री बिजीत भी कहा जाता है।

क्यों बोये जाते है ज्वारे

संपूर्ण हिंदू समाज में नवरात्र के प्रारंभ में जब घट की स्थापना की जाती है। उसी समय जो बोने की प्रथा है उसे जवारे बोना कहते हैं या खेत्री बिजीत कहते हैं। जो जौ बोये जाते हैं, उनके उत्पन्न होने पर या बड़े होने पर जवारे बोला जाता है।

कथा - मां दुर्गा का जो हम पाठ करते हैं। उसके ग्यारहवें अध्याय में इस बात का उल्लेख है माँ शाकंभरी देवी के सम्मान में जवारे बोए जाते हैं। माँ शाकंभरी, दुर्गा माता का रूप है और माँ पोषण की माता है। अतः हमारा घर परिवार सुख समृद्धि और धन्य धन्य से भरपूर रहे। इसलिए जवारे बोए जाते हैं। जौ बसंत ऋतु की पहली फसल है। उसको मां के चरणों में अर्पण करना मानव अपना पहला कर्तव्य समझता है।

मान्यतायें -

एक मान्यता यह भी है जब सृष्टि का प्रारंभ हुआ था, तो पहली फसल जौ की हुई थी, इसलिए इसे देवी माता पर चढ़ाया जाता है। धरती पर जितने भी अनाज हैं उसमें जौ को पूर्ण अन्न माना जाता है। अन्य किसी अनाज को नहीं। यही कारण है कि हवन आदि में जौ को ही देवी देवताओं को अर्पित किया जाता है। तीसरी मान्यता वैज्ञानिक जौ सबसे सरलता से पचता है तथा स्वास्थ्यवर्धक है। बहुत सी बीमारियों में इसका उपयोग किया जाता है। उपरोक्त भिन्न-भिन्न कारण है, इन्हीं कारणों से जवारे बोए जाते हैं।

जवारे कैसे बोये -

जवारे बोने के लिए जहाँ पर हम दुर्गा माँ की मूर्ति की स्थापना करें। उनके आगे जवारे बोए जाते हैं। जवारे बोने के लिए एक बांस की डलिया ले यदि बांस की डलिया उपलब्ध ना हो तो आप कच्ची जमीन अथवा पक्की जमीन पर चौकोर रूप में मिट्टी की परत जमा कर वहां पर जवारे बोयें। पहले जितने जौ बोने हो उन्हें अच्छी तरह से साफ कर ले। फिर जौ को साफ पानी में रात भर भिगो दे। आप देखेंगे जो खराब होंगे वह ऊपर आ जाएंगे उन्हें आप निकाल दें तथा जो पानी में नीचे बैठे हैं। सिर्फ उन्हीं को मां दुर्गा का नाम लेकर उस मिट्टी में मिला दे। मिट्टी जो के ऊपर थोड़ी सी ही डालें साथ में मां लक्ष्मी जी का भी आवाहन करने के लिए थोड़े से साफ गेहूं के दाने भी डाल दें। जब हम जौ बोये, उस समय नौ माताओं तथा नवग्रह का नाम भी लें। जो बोने के बाद बीचों बीच में मिट्टी का कलश स्थापित करें उस कलश में जल भर दें तथा ऊपर आम के पत्ते लगाकर श्रीफल लाल कपड़े में लपेटकर रख दें। एक बार घट स्थापित करने के बाद उसे हिलाते नहीं हैं। अब पानी का छिड़काव करें मिट्टी का कलश रखने का यह लाभ होता है। उसमें नमी बनी रहती है तथा 9 दिन तक जल भरा रहता है। 9 दिन तक जौ के ऊपर जो हम जल डालते हैं। उस कारण घट भी नमी से भरा रहता है आप देखेंगे 3 दिन बाद जौ में अंकुर फूटने लगेंगे और बाकी 6 दिन बहुत तेजी से बढ़ेंगे। कलश के पास दीपक नहीं जलाते हैं। दीपक माँ दुर्गा के सामने जलाना चाहिए।

भविष्य का ज्ञान -

जवारे की वृद्धि हमें हमारे भविष्य का भी संकेत देती है ऐसी लोगों की मान्यता है यदि जवारे हरे हरे रंग के और काफी लंबे हो तो घर में सुख समृद्धि आएगी यदि जवारे मुरझाए हुए हो तो यह संकेत है कि घर में कोई कष्ट आने वाला है। समाज का हर वर्ग के लिए अलग-अलग अर्थ होता है, जौ अगर तेजी से बढ़ते हैं तो किसान प्रसन्न होता है। उसकी फसल तेजी से बढ़ेगी अर्थात अच्छी होगी। वैश्य के लिए अच्छे तथा बुरे व्यापार का संकेत होता है। क्षत्रियों के लिए युद्ध में जय तथा पराजय का संकेत है। ब्राह्मण इसे अपने अध्ययन से जोड़कर देखता है। उसकी शिक्षा पूरी होगी अथवा अधूरी। नवमीं वाले दिन ज्वारे की पत्तियां तोड़ कर बहन माँ के आशीर्वाद स्वरूप अपने भाई के माथे पर तिलक लगाकर उसके कान जवारे रखती है, तथा सगे संबंधियों के यहाँ जाकर जवारे कान पर रखकर उनसे आशीष लिया जाता है, तथा कलश का जल पूरे घर में छिड़क दिया जाता है। यदि जवारे बचते हैं तो उन्हें ठंडा कर देते हैं।

नारी का सम्मान ही संस्कृति का उत्थान है

- **कैलाश चतुर्वेदी**, कासगंज

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्चत्याशु तत्कुलम।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।

'मनु स्मृति' का यह उदघोष कहता है कि जिस कुल में नारी प्रसन्न रहती है वह कुल सदैव फलता फूलता और समृद्ध रहता है। भारतीय संस्कृति में नारी का उच्च स्थान रहा है, इस का आधार है उसका सृष्टि एवं जीवन की सृजन शक्ति के रूप में पुरुष से अधिक भाव प्रवण एवं विशिष्ट होना। भारतीय परंपरा में ईश्वरीय प्रवाह की शक्ति धाराओं को इनके युग में पहले स्थान दिया गया है जैसे लक्ष्मी -नारायण, सीता-राम, राधा कृष्ण आदि। इसी तरह महापुरुषों के नाम भी माता के नाम से ही जोड़ कर स्मरण किए जाते हैं जैसे गंगा पुत्र भीष्म, कुंती पुत्र अर्जुन, देवकी नंदन श्री कृष्ण आदि।

नारी ईश्वर की अनमोल कृति है एवं श्रेष्ठतम रचना है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में कहें तो ईश्वर की प्रथम अभिव्यक्ति ही वह हाथ है जो पालना झूलाता है। संसार में चेतना के अविर्भाव का श्रेय नारी को ही जाता है। वह अपने वात्सल्य से, प्रेम से, साधना से, सेवा से, संवेदना से पूरे परिवार, समाज व राष्ट्र को सींचती है। पुरुष अपने पिता के कुल का प्रतिनिधित्व करता है तो वही नारी अपने पिता व पति दोनों के कुलों का प्रतिनिधित्व करती है। उसके ऊपर दोहरी जिम्मेदारी होती है।वह अपने श्रेष्ठ आचरण व आदर्श से दोनों कुलों को गौरवान्वित करती है। नारी सुजाता, सुपत्नी और सद् ग्रहणी है क्योंकि विद्या उसका श्रृंगार, सादा जीवन तंदुरुस्ती, प्रत्येक कार्य में परिश्रम उसका व्यायाम तथा संतानों को जीवन मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर समाज की समृद्धि में अपना योगदान देना ही जीवन का लक्ष्य है।

नारी की महत्ता से भारतीय वाङ्मय भरे पड़े हैं।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमक्ते तत्र देवता

शास्त्रों,साहित्यकारों, कवियों व दार्शनिकों ने भी नारी के विभिन्न गुणों को वखाना है।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखते हैं– नारी जगत की पवित्र ज्याती है, त्याग उसका स्वभाव है, अर्पण उसका धर्म ,सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।वही कवि मैथिलीशरण गुप्त ने मात्रिक गुणों के आधार पर विश्लेषण किया है उनके अनुसार नारी नर से सदैव भारी है क्योंकि

एक नहीं दो–दो मात्रायें।

नर से भारी नारी है।

इतिहास गवाह है कि हर कामयाब पुरुष के पीछे एक नारी का हाथ होता है –गोस्वामी तुलसीदास जी को संत तुलसीदास एवं रामचरितमानस जैसे महाकाव्य के रचयिता तक पहुंचाने वाली उसकी पत्नी रत्नावली ही थी।स्वामी विवेकानंद का विवेक भी एक स्त्री के कारण ही जागृत हुआ था फिर चाहे वह जगदगुरु शंकराचार्य की मां अंबिका हो या वीर शिवाजी की मां जीजाबाई ही क्यों ना हो। देवताओं ने जब अपने आयुध मातृशक्ति को प्रदान किए तभी महिषासुर का वध हुआ। नारी शक्ति है ,शक्ति के बिना शिव भी शव समान है।

सूर्य का तेज, चांद की शीतलता, पृथ्वी की सहनशक्ति, सागर की गंभीरता तथा प्रकृति का समस्त सौंदर्य नारी में निहित है। समाज की प्रबुद्ध नारियों से आग्रह है कि वह अपनी मेधा, प्रतिभा, क्षमता एवं शक्ति सामर्थ्य से आगे आए और नव सृजन का शंख बजाएँ।

लांगुरिया

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ एवं चतुर्वेदी गुइयाँ, भोपाल द्वारा लांगुरिया का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम जूम पर ऑनलाइन दिनाँक 9 अक्टूबर 2021 को श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी एवं श्रीमती शिवांगी के संयोजन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, आदरणीय अनुपमा चतुर्वेदी, दिल्ली रही। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि आदरणीय शारदा चतुर्वेदी, भोपाल थी।

कार्यक्रम में संपूर्ण भारतवर्ष में महिलाओं की भागीदारी रही। उन्होंने अपने-अपने लांगुरिया प्रस्तुत किए। उनमें से कुछ लांगुरिया यहाँ प्रस्तुत है।

- श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, श्रीमती शिवांगी चतुर्वेदी

***

लाँगुर जयपुर ज इयो रे
जयपुर से ल इयो हरी चूड़ी
मैं तो पहन ओंढ़ निकली
अगनबा में फिसल पड़ी
मैं तो जान गई जान गई
सासुलिया की की नजर लगी
लॉगूर जयपुर ज इयो रे
जयपुर से ल इयो हरी चूड़ी
मै तो पहन ओढनिकली
अगनबा में फिसल पड़ी
तो जान गई जान गई ते ननदिया की लांगुर नजर लगी।
मै तो जान गई जान गई रे देवरानी की नजर लगी

- **श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी,** दिल्ली

***

लांगुरिया तेरी एक ना मानुगी, भवन मे छम छम नाचूगी भवन मे ससुर मेरे खड़े है, ससुर से पर्दा करूंगी

भवन मे------

भवन मे देवर मिल जायेगे , देवर संग नाचूगी

भवन मे------

भवन मे ननदोई मिल जायेगे , ननदोई के पैर छू लूगी , भवन मे छम छम नारंगी

लागू तेरी एक ना मानूँगी भवन मे छम छम नाचूगीं

-**श्रीमती नीमा चतुर्वेदी,** मुंबई

***

रात को सन्नाटों दइया मारे डारे ननदी . मारे डारे ननदी मरोडे डारे ननदी . रात को...,.

टीका ले जा ननदी हरवा ले ननदी टीका ले.,.. द्वारे बैठे सैया उन्हऊं ले जा ननदी. रात को सन्नाटों दइया मारे डारे ननदी

झूमका ले जा ननदी कगना ले जा ननदी.

झूमका ले.... द्वारे बैठे सैया उन्हऊं ले जा ननदी. रात को सन्नाटों दइया मारे डारे ननदी..

तगडी ले जा ननदी पायल ले जा ननदी तगडी ले जा ननदी.द्वारे बैठे सैया उन्हऊं ले जा ननदी

.. रात को सन्नाटों दइया मारे डारे ननदी

लहंगा ले जा ननदी साड़ी ले जा ननदी लंहग़ा ले जा.. द्वारे बैठे सैया उन्हऊं ले जा ननदी..

रात को सन्नाटों दइया मारे डारे ननदी मारे डारे ननदी मरोडे डारे ननदी

- **श्रीमती अपर्णा चतुर्वेदी,** बुलंदशहर

***

कुल्हड़ फूट गयो मोटर में
प्यासी मर गई लांगुरिया
प्यासी मर गई लांगुरिया
काने से काना मत कहिओ
काना जाऐगौ रूठ
धीरे धीरे पूंछिओ
तेरी कैसे गई फूट। कुल्हड़ फूट---
लंगड़े से लंगड़ा मत कहिए
लंगड़ा जाऐगौ रूठ
धीरे धीरे पूंछिओ
तेरी कैसे गई टूट कुल्हड़ ---
मोटे से मोटा मत कहिओ
मोटा जाऐगौ रूठ
धीरे धीरे पूंछिओ
होले होले पूछिए
तू कैसे गयो फूल कुल्हड़ --

-**श्रीमती इंदू चतुर्वेदी,** नोएडा

***

ठाड़ी ठाड़ी रे पुलिस दरबार लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

मेरे ससुर गए देवी दर्शन को सासुलिया भले लुट जाए लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

ठाड़ी ठाड़ी रे पुलिस दरबार लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

मेरे जेठ गए देवी दर्शन को जेठानी भले लुट जाए लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

ठाड़ी ठाड़ी रे पुलिस से दरबार लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

मेरे देवर गए देवी दर्शन को देवरानी भले लुट जाए लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

ठाड़ी ठाड़ी रे पुलिस दरबार लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

मेरे नंदोई गए देवी दर्शन को ननदिया भले लुट जाए लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे ठाड़ी ठाड़ी रे

पुलिस दरबार लांगुरिया ऊंचे महल डाका पड़ गयो रे

–**श्रीमती संचिता चतुर्वेदी,** साहिबाबाद

***

मुझे ले चल रोड ही रोड लंगुरिया साड़ी के सितारे सब झड़ जाएंगे।

मेरे ससुर सुनेंगे कछु ना कहेंगे मेरे जेठ सुनेंगे कछु ना कहेंगे सासरिया हंसी उड़ाए लांगुरिया साड़ी के सितारे सब झड़ जाएंगे।

जेठानी अधर उड़ाए लंगुरिया साड़ी के सितारे सब झड़ जाएंगे।

मेरे देवर सुनेंगे कछु ना कहेंगे नंदोई सुनेंगे कछु ना कहेंगे देवरानी हंसीउड़ाई लंगुरिया साड़ी के सितारे सब झड़ जाएंगे।

मोहे ले चल रोड़ ही रोड लंगुरिया साड़ी के सितारे सब झड़ जाएंग। मेरे बलम सुनेंगे कछु ना कहेंगे सौतन या अदर उड़ाए लांगुरिया साड़ी के सितारे सब झड़ जाएंगे मोहे ले चल रोड़ी रोड लांगुरिया साड़ी के सितारे सब झड़ जाएंगे।

–**श्रीमती गुंजन चतुर्वेदी,** साहिबाबाद

***

लांगुरिया ऐसे डोले
जैसे लंका में डोले हनुमान
सोने की थाली में ज्योना परोसा
लांगुरिया ऐसे खाबे
जैसे लंका मे खाबे हनुमान
लांगुरिया ऐसे डोले......
सोने के गड़ुआ गंगाजल पानी
लांगुरिया ऐसे पीबे
जैसे लंका में पीबे हनुमान
लांगुरिया ऐसे डोले....
पान पचीसे के बीड़े लगाये
लांगुरिया ऐसे चाबे
जैसे लंका में चाबे हनुमान
लांगुरिया ऐसे डोले.....
बेला चमेली की सेज सजायी
लांगुरिया ऐसे सोबे
जैसे लंका में सोबे हनुमान
लांगुरिया ऐसे डोले.....

– **श्रीमती चित्रा प्रभात चतुर्वेदी,** भोपाल

***

मेरे लम्बे है गये केश चुटीला लेदे लांगुरिया
काले काजल से मेरे लम्बे लम्बे बाल
लट मेरी आकर गिरे मेरे गोरे गोरे   गाल
पंचरंगो और चमकनो लियो चुटीला मोल
लोभ तनिक न कीजिए अंटी दीजो खोल
लम्बे लम्बे केश देख के जले पड़ोसन रोज
ठेंगा मारू उसको पर नहीं लागू भोज

–**श्रीमती पदमा नवीन चतुर्वेदी,** भोपाल

***

मस्ती में झूम रहो मैया जी तेरो लांगुरिया

बागों में जाऊं तो पाछे पाछे आए मालीन संग नाचे रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

मस्ती में झूम रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

तालों पर जाऊं तो संग संग चाले धोबिन संग नाच रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

कुआं कहां पर जाऊं तो पाछे पाछे चाले ढीमर संग नाच रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

मस्ती में झूम रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

मंदिर में जाऊं तो पीछे पीछे चले भक्तों के संग नाच रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

महलों में जाऊं तो संग संग चले रानी संग रांची रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

मस्ती में झूम रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

कीर्तन में जाऊं तो संग संग चले

भक्तिन संग नाचे रहो मैया जी तेरे लांगुरिया

– **श्रीमती आभा अभय चतुर्वेदी,** दिल्ली

***

दरवाजे पर ठाडी लहराए लंगुरिया,
तेरी धन खाय लई काले नाग ने।
कछु खाई कछु डस लई कछु मारी फुँसकार लंगुरिया
गोरी धन खायलयी काले नाग ने
झांज बजे डमरु बाजे और बजे मधुरिया बीन लंगुरिया।
गोरी धनखाय लई काले नाग ने
पनिया भरन को हम चाली रस्सी से लिपट गई नाग लगुरियॉ
गोरी धनखाय लयी।काले नाग ने
कौन दिशा के बाएगी, कौन दिशा के वैद्य लंगुरिया
पूरब दिशा के बाएगी, पश्चिम दिशा के वैध लांगुरिया
झाड़–फूंकत बाएगी, और दबा देत वैद्य लांगुरिया।
तेरी धन खाई काले नाग ने

– **श्रीमती वंदना चतुर्वेदी,** मैनपुरी

***

!! माता के जश!!
नथ को नगीना मैया नथ को नगीना कहां गिरो होय माय
नगीना कहां गिरो हों माय
मैया बागों गई थी मैया बागो
गयी थी
वहाँ गिरो हो माय
माली से लीजो दुडवाय मेरी अबला नथ को ––––/
मैया तालों गयी थी मैया तालों
गयी थीं वहीं गिरो हो माय
धोबी से लीजो ढुडवाय मेरी अबला नथ को––//
(इसी तरह कुअटो में धीमर से महलो में राजा से तथा मन्दिर में भगतो से कहना है)
सुमरि सुमरि जश गाइयो हो माय
चरण छोडः कहाँ जाऊँ मेरी अबला नथ को –––––
राजा करन महाराजा करन
दानी भये हो माय
मैया लें झण्डा आगे भये हो माय
मैया लेओ झण्डा को दान मेरी अबला
ऐसो दान फिर ना मिले हो माय
राजा करन –––––
(इसी तरह निबुआ नरियल खप्पर चुनरी हलुआकहनाहै)
सुमरि सुमरि जश गाइयो हो माय
और चरण छोड़ न जाऊँ
मेरी अबला
राजा करन महराजा करन दानी भये हो माय

मोपे पर सीढ़ियां चढ़ी ना जाए लांगुरिया एड़ी में लगे धमक लगे जोहर की
मेरे ससुर गए कैला दर्शन को हां हां रे लांगुरिया
सास पर चलो ना जाए लांगुरिया
एड़ी में धमकलगे जोहर की
मेरे जेठ गए कैला दर्शन को
जेठानी को लग गई लपट लांगुरिया
एडी में –––––––
मेरे देवर गए माई दर्शन को
और छोटी खड़ी रिसिया लंगुरिया
मेरे नंदोई गए केला जातो को
मेरी ननदी ठुमका लेयलांगुरिया
एड़ी में––––––
मेरे राजा गए कैला दर्शन को
मेरी गोद जरुलो पूतलांगुरिया
एडी में –––––
****

लागो लगो है धूल का फूल   लागुरिया
चलो सिनेमा देखन को
मेरे ससुर गये है देखन को
सास को ले गये साथ लागुरिया
चलो सिनेमा–––––
मेरे जैठ गये है देखन को
जिठनी को छोड़ गये घरे लागुरिया
चलो सिनेमा ––––––
मेरे देवर गये है देखन को हाँ हाँ रे लागुरियां
छोटी खडी रिसियाय लागुरियां
चलो सिनेमा ––––//
मेरे राजा गये है देखन को हाँ हाँ रे लागुरियां
हमऊं चले गये साथ लागुरियां
चलो –––––
***

अन रितु को बरस गउ मेह लांगुरिया हम तुम भीगे दोऊ गेल में हाँ हाँ रे लगुरियाँ हम तुम भीगे _ कौने दिशा बदरा उठे और कौने दिशाभये मेह लांगुरिया
पूरब और दिशा बादरा उठे और पश्चिम दिशा भये मेह लांगुरिया
कौन की भीगे चुनरी और कौन की भीगे पाग लांगुरिया हम तुम भीगे दो गेल में

केला की भीगे चुनरी और लंगूर हां हां रे लांगुरिया भीगे पाग लांगुरिया
कहां सुखाऊ चुनरी और कहां सुखा उ पाग लांगुरिया हम तुम भीगे दोउगैल में हां हां रे लांगुरिया हम तुम भी गै दोऊ गेला में
मन्दिर सुखांऊ चुनरी और द्वारे सुरवाऊं पाग लंगुरिया
मेरे मन में उठत हिलोर, लंगुरिया लै चल देवी दर्शन कौ।
चलबे की कर लै तैयारी, सज गयो नैजा सज गयी थारी।
केहि विधि करौ निहोर लंगुरिया, लै चल – –
***
सास ससुर मेरे गये जात कौ,
कोई न जाने मेरे मन की बात कौ
मेरौ नाय काऊ पै जोर लंगुरिया, लै चल––
जेठ जिठानी गये जात कौ,
मैं तरसू काऊ संग साथ कौ
तोसे विनती है कर जोर, लंगुरिया लै चल – –
केला मैया ने कह दई तेरे होयगो लांगुरिया
सास अटारी चढ़ गई और ससुरा जोड़े हाथ
उत्तर उत्तर परमेश्वरी मैंने तोही पै
बोली जात
जेठानी अटारी चढ़ गई
जेठा जोड़े हाथ
उत्तर उत्तर परमेश्वरी मैंने तोही
पे बोली जात
(इसी तरह दोरानी एवं ननद के लिए कहा जायेगा)
भोपाल में निकली है गैस लांगुरिया
चलो हमीदिया देखने को
मेरे ससुर गए देवी दर्शन को
हां हां रे लांगुरिया
और सास को लग गैस लांगुरिया चलो हमीदिया देखने को
(इसी तरह जेठ देवर नदोई के लिए कहा जायेगा)
(मेरी चट्टो है गई जीभ
जलेबी लाए दे लांगुरिया
ससुर हमारे बड़े शोकिया
भर भर दोना लाये
सास हमारी बड़ी विदको।घूरे पे फिकवाये
मेरी चट्टो है गयी –––––
जेठ हमारे बड़े हैं रसिया
भर भर ठोंगा लाये
जिठनी हमारी बडी लड़ाका नाली में फिकवाये
मेरी चट्टो है –––––
देवर हमारे बड़े रंगरसिया
जेबो में भर लाए
छोटी हमारी। छम्मक छल्लो
दिखा दिखा के खाए
मेरी चट्टो –––//
मेरे ससुर गए हैं जाति लांगुरिया
हवेली पे डाको बैरी पर गयो
हाँ हाँ रे लगुरिया
धड़ धड धड धड़ गोला बाजे
और तड़क तड़क बन्दूक लगुरियाr
हवेली पे डाको बैरी ––––
चीज बत मेरी कछु ना गयी
हाँ हाँ रे लागुरिया
मेरे जोवन की कर गयो धूर लागुरिया
हवेली पे डाको बैरी पर गयो
मेरे जेठ गए है जात लागुरियां
हवेली पर डाको बेरी पड़ गयो
धड़ धड़ धड़ धड़ गोला बाजे।
और खनक खनक तलवार लागुरिया।
चीज बत्त मेरी कछु ना गयी ।
हां हां रे लागुरिया।
मेरी अखियन से. ले गयो नींद लगुरिया।
मेरे देवर गए हैं जात लांगुरिया।
हवेली पे डाको बैरी पर गयो।
धड़ धड़ धड़ धड़ गोला बाजे ।
और चले दनादन लठठ लागुरिया।
हवेली पे डाको बैरी पर गयो।
चीज बत्त मेरी कछु ना गयी।
हां हां रे लागुरियां
मेरे मन को लेगयो चैन लागुरिया।हवेली–––––
मेरे ननदोई गयेहै जात लागुरिया।
हवेली पे डाको बैरी पर गयो
हाँ हाँ रे लागुरिया।
धड़ धड़ धड़ धड़ गोला बाजे। तड़क तड़क बन्दूक लागुरयाँ।
चीज बत मेरी कछु ना गयी।
ननदी को ले गयो साथ लागुरिया।हवेली –––/
मेरे संग हैं लक्ष्मण रामलंगुरिया,
भवन में बहियांजोरी मति करियो।
सासु हमारी जनम की बैरन
तुरत करैगी बदनाम लंगुरिया। भवन में – –

जेठ जिठानी जनम के बैरी, मेरो लगे न कोई दाम लंगुरिया। भवन में-

भवन में मैय्या के लगन लगी है,
लै चल उनके धाम लंगुरिया।
भवन में बहियां जोरी मति करियो।
टेंपो वाले ने अठन्नी ज्यादा ले लई लांगुरिया।
ले लई लांगुरिया अरे हाँ लेलई लागुरियां
ससुर हमारे बड़े सोकिया मोटर लेने जायें।
सास हमारी बड़ी है जिद्दी रही है पैदल घूम
जेठ हमारे बड़े शौकिया गए हैं
मोटर लेन
जिठनी हमारी बड़ी है जिद्दी रही है पैदल घूम
(इसी तरह देवर ननदोई के लिए कहा जायेगा)

अंबे रानी के भवन में नाचे लांगुरिया
शेरोवाली के भवन में नाचे लांगुरिया
लांगुर गए बाजार को टीका लाए मोल।
ना पहने मेरी मैया रानी के भवन में शोर
मैया रानी के भवन में नाचे लांगुरिया।
नाचे लांगुरिया नाचे लांगुरिया
लांगुर गए बाजार को साड़ी लाए मोल
ना पहने मेरी मैया रानी करे भवन में शोर मैया रानी के भवन में नाचे लांगुरिया
(इसी तरह से चूड़ी पायल बिछिया लहंगा चुनरी कहना है)

– **श्रीमती स्वाती चतुर्वेदी,** रांची

***

!! जश !!

नथ को नगीना मैया नथ को नगीना कहां गिरो होय माय
नगीना कहां गिरो हों माय
मैया बागों गई थी मैया बागो
गयी थी
वहाँ गिरो हो माय
माली से लीजो दुडवाय मेरी अबला नथ को ----/
मैया तालों गयी थी मैया तालों
गयी थीं वहीं गिरो हो माय
धोबी से लीजो ढुडवाय मेरी अबला नथ को--//
(इसी तरह कुअटो में धीमर से महलो में राजा से तथा मन्दिर में भगतो से कहना है)
सुमरि सुमरि जश गाइयो हो माय
चरण छोडः कहाँ जाऊँ मेरी अबला नथ को -----
राजा करन महाराजा करन
दानी भये हो माय
मैया लें झण्डा आगे भये हो माय
मैया लेओ झण्डा को दान मेरी अबला
ऐसो दान फिर ना मिले हो माय
राजा करन -----
(इसी तरह निबुआ नरियल खप्पर चुनरी हलुआकहनाहै)
सुमरि सुमरि जश गाइयो हो माय
और चरण छोड़ न जाऊँ
मेरी अबला
राजा करन महराजा करन दानी भये हो माय

मोपे पर सीढ़ियां चढ़ी ना जाए लांगुरिया एड़ी में लगे धमक लगे जोहर की

मेरे ससुर गए कैला दर्शन को हां हां रे लांगुरिया
सास पर चलो ना जाए लांगुरिया
एड़ी में धमकलगे जोहर की
मेरे जेठ गए कैला दर्शन को
जेठानी को लग गई लपट लांगुरिया
एडी में -------
मेरे देवर गए माई दर्शन को
और छोटी खड़ी रिसिया लंगुरिया
मेरे नंदोई गए केला जातो को
मेरी ननदी ठुमका लेयलांगुरिया
एड़ी में------
मेरे राजा गए कैला दर्शन को
मेरी गोद जरुलो पूतलांगुरिया
एडी में -----
मोहे भयो पीलिया रोग लगुरियाँ चलो तो दर्शन कर आवें
हां हां रे लांगुरिया चलो तो दर्शन कर। आबे
मेरे ससुर गए केला दर्शन को
और सासु को ले गए साथ लांगुरिया
चलो तो दर्शन कर आवे
मेरे जेठ गए वैद लेने को
और जेठानी मेरी घबराए लांगुरिया
मेरा देवरा गयो गुनिया लेने को
मेरी देवरानी मुझे झड़ बाय
लंगुरिया
चलो तो दर्शन कर आवे
नंदोई मेरे जड़ी ले आए
ननंद मेरी पीस बाय लांगुरिया

चलो तो
***
भइया गयो करन व्यापार
भाभी को लै गयो लांगुरिया
राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट
अन्त काल पछिताएगा जब प्राण जायेगे छूट
भईया-----/
राम नाम के काज में सद वचन दीनो खोय
मूरख जाने गिर पडो दिन दिन दुनों होय
राम झरोखे बैठ के सबको मुजरा लेय
जैसी जाकी चाकरी बैसे ही बाको देय
राम नाम लिखा नही किया न हर सौ हेत
ये नर यूहीं जायेगें मूली जैसो खेत
राम बढ़ाय जो बड़े बलकर बढो न कोय
बल करके रावण बढ़ो छन में दीनो खोय

लागो लगो है धूल का फूल लागुरिया
चलो सिनेमा देखन को
मेरे ससुर गये है देखन को
सास को ले गये साथ लागुरिया
चलो सिनेमा-----
मेरे जैठ गये है देखन को
जिठनी को छोड़ गये घरे लागुरिया
चलो सिनेमा ------
मेरे देवर गये है देखन को हाँ हाँ रे लागुरियां
छोटी खडी रिसियाय लागुरियां
चलो सिनेमा ----//
मेरे राजा गये है देखन को हाँ हाँ रे लागुरियां
हमऊं चले गये साथ लागुरियां
चलो -----
अन रितु को बरस गउ मेह लांगुरिया हम तुम
भीगे दोऊ गेल में हाँ हाँ रे लगुरियाँ हम तुम भीगे _
कौने दिशा बदरा उठे और कौने दिशाभये मेह लांगुरिया
पूरब और दिशा बादरा उठे और पश्चिम दिशा भये मेह लांगुरिया
कौन की भीगे चुनरी और कौन की भीगे पाग लांगुरिया हम तुम भीगे दो गेल में
केला की भीगे चुनरी और लंगूर हां हां रे लांगुरिया भीगे पाग लांगुरिया
कहां सुखाऊ चुनरी और कहां सुखा उ पाग लांगुरिया हम तुम भीगे दोउगैल में हां हां रे लांगुरिया हम तुम भी गै दोऊ गेला में
मन्दिर सुखांऊ चुनरी और द्वारे सुरवाऊं पाग लगुरियां
मेरे मन में उठत हिलोर, लंगुरिया लै चल देवी दर्शन कौ।
चलबे की कर लै तैयारी, सज गयो नैजा सज गयी थारी।
केहि विधि करौ निहोर लंगुरिया, लै चल – – –
सास ससुर मेरे गये जात कौ,
कोई न जाने मेरे मन की बात कौ
मेरौ नाय काऊ पै जोर लंगुरिया, लै चल--
जेठ जिठानी गये जात कौ,
मैं तरसू काऊ संग साथ कौ
तोसे विनती है कर जोर, लंगुरिया लै चल – –

मेरे ससुर गए हैं जाति लांगुरिया
हवेली पे डाको बैरी पर गयो
हाँ हाँ रे लगुरिया
धड़ धड धड धड़ गोला बाजे
और तड़क तड़क बन्दूक लगुरियाr
हवेली पे डाको बैरी ----
चीज बत मेरी कछु ना गयी
हाँ हाँ रे लागुरिया
मेरे जोवन की कर गयो धूर लागुरिया
हवेली पे डाको बैरी पर गयो
मेरे जेठ गए है जात लागुरियां
हवेली पर डाको बेरी पड़ गयो
धड़ धड़ धड़ धड़ गोला बाजे।
और खनक खनक तलवार लागुरिया।
चीज बत्त मेरी कछु ना गयी ।
हां हां रे लागुरिया।
मेरी अखियन से. ले गयो नींद लगुरिया।
मेरे देवर गए हैं जात लांगुरिया।
हवेली पे डाको बैरी पर गयो।
धड़ धड़ धड़ धड़ गोला बाजे ।
और चले दनादन लठठ लागुरिया।
हवेली पे डाको बैरी पर गयो।
चीज बत्त मेरी कछु ना गयी।
हां हां रे लागुरियां
मेरे मन को लेगयो चैन लागुरिया।हवेली-----
मेरे ननदोई गयेहै जात लागुरिया।
हवेली पे डाको बैरी पर गयो
हाँ हाँ रे लागुरिया।

धड़ धड़ धड़ धड़ गोला बाजे। तड़क तड़क बन्दूक लागुरयाँ।
चीज बत मेरी कछु ना गयी।
ननदी को ले गयो साथ लागुरिया। हवेली ---/

मेरे संग हैं लक्ष्मण रामलंगुरिया,
भवन में बहियांजोरी मति करियो।
सासु हमारी जनम की बैरन
तुरत करैगी बदनाम लंगुरिया। भवन में - -
जेठ जिठानी जनम के बैरी,
मेरो लगे न कोई दाम लंगुरिया। भवन में-
भवन में मैय्या के लगन लगी है,
लै चल उनके धाम लंगुरिया।
भवन में बहियांजोरी मति करियो।
****
लांगुर नाच रहे मंदिर में अपनी लांगुरिया के साथ
अपनी लांगुरिया के साथ, अपनी लांगुरिया के साथ
लांगुर नाच रहे मंदिर में अपनी लांगुरिया के साथ।
ससुर हमारे ढोल बजाएँ, सास बजाएँ मंजीरा
जयकारा जब जोर लगाएँ, गूँज उठे दरबार
लांगुर नाच रहे मंदिर में ......
जेठ हमारे ढोल बजाएँ, जिठानी बजाएँ मंजीरा
जयकारा जब जोर लगाएँ, गूँज उठे दरबार
लांगुर नाच रहे मंदिर में .....
देवर हमारे ढोल बजाएँ, देवरानी बजाएँ मंजीरा
जयकारा जब जोर लगाएँ, गूँज उठे दरबार
लांगुर नाच रहे मंदिर में .....
सजन हमारे ढोल बजाएँ, मैं बजाऊँ मंजीरा
जयकारा जब जोर लगाएँ, गूँज उठे दरबार।
लांगुर नाच रहे मंदिर में.....

**
चाँदी में सोने का पानी क्यों चढ़वाया लांगुरिया
क्यों चढ़वाया लांगुरिया, क्यों चढ़वाया लांगुरिया
चाँदी में सोने का पानी क्यों चढ़वाया लांगुरिया।
कहे लांगुरिया सुनो रे लांगुर, बैना ला दो मोय
जो बैना चाँदी का होवे, सजा करा दूँ तोय।
चाँदी में सोने का पानी .....
कहे लांगुरिया सुनो रे लांगुर, हरवा ला दो मोय
जो हरवा चाँदी का होवे, सजा कर दूँ तोय।
चाँदी में सोने का पानी.....
कहे लांगुरिया सुनो रे लांगुर, कंगना ला दो मोय
जो कंगना चाँदी का होवे, सजा करा दूँ तोय।
चाँदी में सोने का पानी ......
कहे लांगुरिया सुनो रे लांगुर, तगड़ी ला दो मोय
जो तगड़ी चाँदी की होवे, सजा करा दूँ तोय।
चाँदी में सोने का पानी ... ..
कहे लांगुरिया सुनो रे लांगुर, बिछुआ ला दो मोय
जो बिछुआ चाँदी का होवे, सजा करा दूँ तोय।
चाँदी में सोने का पानी ....

– **संगीता चतुर्वेदी,** चेन्नई

***
मैया विनती करूँ मैं दोऊ कर जोरी
मैया एक अरज मेरी सुन लीजो
मेरे माथे की बिन्दिया अमर करियो
मैया विनती करूँ मैं दोऊ कर जोरी
मैया एक अरज मेरी सुन लीजो
मेरे हाथों की चूड़ियाँ अमर करियो
मैया विनती करूँ मैं दोऊ कर जोरी
मैया एक अरज मेरी सुन लीजो
मेरे गोदी की बिटिया/बेटा अमर करियो
मैया विनती करूँ मैं दोऊ कर जोरी,

श्रीमती ज्योति चतुर्वेदी, अमेरिका

***

सीता बैंठी बागन बीच लांगुरिया
राम लिबउआ कब आएंगे - 2
1- हां हां रे लांगुरिया, पहले लिबउआ हनुमान गये - 2
लंका में लगाए दई आग लांगुरिया राम लिबउआ कब आएंगे
सीता बैंठी.............
2- हां हां रे लांगुरिया, दूजे लिबउआ अंगद गये - 2
जिनने धरे सभा में पांव लांगुरिया राम लिबउआ कब आएंगे
सीता बैंठी..............
3- हां हां रे लांगुरिया तीजे लिबउआ लक्ष्मण गये - 2
जिन्हें लग गये शक्ति बाण लांगुरिया राम लिबउआ कब आएंगे।
सीता बैंठी..............
4- हां हां रे लांगुरिया चौथे लिबउआ श्री राम गये - 2
बे तो संग में लाए लिबाये लांगुरिया राम लिबउआ कब आएंगे
सीता बैंठी.............

– **श्रीमती शिल्पी चतुर्वेदी,** कोलकाता

निवेदन

दिनांक 14 मार्च 2022 (अन्नपूर्णा सहयोग राशि)

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित की योजनाओं जैसे अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति आदि के अंतर्गत प्रदान की जा रही है।

अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वर्तमान सभापति डॉ. प्रदीप जी द्वारा सम्पूर्ण समाज से अधिक से अधिक शीघ्र सहयोग की अपील की गई है। वर्तमान में 40 लाभार्थी परिवारों को यह सहायता त्रैमासिक जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। प्रत्येक परिवार को अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वार्षिक 24,000/- रुपए भेजे जाते है।

आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग की अपेक्षा है।

*इस सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2021-22 में अभी तक त्रैमासिक (अप्रैल-जून, जुलाई-सितंबर तथा अक्टूबर-दिसंबर, January - March २०२२) रू. 8, 65, 800/-राशि सीधे बैंक खाते ने स्थान्तरित की जा चुकी है।

आपसे अनुरोध है कि 6 माह के लिए 12,000 रुपए या वार्षिक 24,000 रुपए की राशि का सहयोग करने की कृपा करें।

समाज के निम्नांकित सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि का वर्ष 2021-22 में अपना अमूल्य योगदान किया है :-

1. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
2. श्री स्वयंभू चतुर्वेदी, बंगलोर - 12,000/-
3. श्री असीम चतुर्वेदी, अलीगढ़ - 12,000/-
4. श्री जयंत कुमार चतुर्वेदी लखनऊ (75वें जन्मदिन पर) - 7575/-
5. श्री मनोज चतुर्वेदी बैंगलोर - 12,000/-
6. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
7. सुश्री शिवानी चतुर्वेदी,बैंगलोर - 24,000/-
8. श्री आनंद श्री भास्कर एवं सुश्री जूही चतुर्वेदी -12,000/-
9. श्री अनुज चतुर्वेदी दिल्ली -12,000/-
10. श्री अविनाश जी, कानपुर - 12000/-
11. श्री जे. पी. चतुर्वेदी - 2500/-
12. सुश्री ममता चतुर्वेदी - 2100/-
13. डॉ. श्रीमती प्रीति मिश्रा, बीकानेर - 5000/-
14. श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी - 50,000/-
15. श्री प्रतीक पांडे, नॉएडा - 12,000/-
16. कैप्टन अनिल चौबे, गुड़गाँव - 12,000/-
17. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
18. श्री मनोज चतुर्वेदी, सागर - 2,000/-
19. श्रीमती आरती चतुर्वेदी,लखनऊ - 12000/-
20. गुप्त सहयोग - 24000/-
21. स्व. श्री प्रभात चतुर्वेदी की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12,000/-
22. बाबू श्री ओंकार नाथ जी स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12000/-
23. श्री निशीथ चतुर्वेदी USA - 5100/-
24. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
25. एड. सुभांग सौरभ चतुर्वेदी (लखनऊ) -2100/-
26. श्री पीयूष चतुर्वेदी (कमतरी/ बैंगलोर) - 12,000/
27. श्री संजय मिश्रा (कानपुर) - 2,100/-
28. श्री मनीष चतुर्वेदी (ग्वालियर) ने स्व. मुरलीधर चतुर्वेदी (ग्वालियर) की स्मृति में 12,000/-
29. सुश्री सौम्या (श्रीलंका), श्री कौस्तुभ (यूएसए) तथा श्री सुमेध (यूएसए) ने पिता श्री गणेश जी चतुर्वेदी (लखनऊ) के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 12,000/-
30. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
31. डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा 12,001/-
32. श्री कृष्णकांत चतुर्वेदी (होलीपुरा/ लखनऊ) अपनी पत्नी शीला चतुर्वेदी की स्मृति में 12,000/-
33. श्री अनुराग चतुर्वेदी (होलीपुरा/गुरुग्राम) द्वारा आनंद सिंह परिवार की और से 15,000/-
34. श्री अपूर्व चतुर्वेदी (होलीपुरा/लंदन) सुपुत्र डा. प्रदीप चतुर्वेदी (सभापति) द्वारा जन्मदिन पर 12,000/-
35. गुप्त सहयोग 24,000/-
36. श्री मनीष चतुर्वेदी,गुरुग्राम -12000/-
39. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
40. श्री के.सी. पांडे,नोयडा -12000/-
41. श्री देवेंद्र नाथ कौशाम्बी - 12000/-

42. श्रीमती आशा चतुर्वेदी, दिल्ली – 48000/–
43. महासभा के संरक्षक श्री मदन कुमार जी (होलीपुरा/कलकत्ता) ने अपनी माता स्व. मालती देवी जी की पावन स्मृति में – 24000/
44. श्रीमती कुसुमलता चतुर्वेदी,कोटा – 12000/–
45. श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी,भोपाल ने स्व. सुबोध चंद्र जी की स्मृति में – 5000/–
45. श्री भुवनेश चौबे, गोंदिया ने अपने जन्मदिन पर –11000/–
46. श्रीमती करुणा चतुर्वेदी की ओर से स्व. सत्यदेव चतुर्वेदी की स्मृति में आलोक चतुर्वेदी (अनूपशहर/कोलकाता) द्वारा – 6000/–
47. श्री राजीव चतुर्वेदी (होलीपुरा/ कानपुर / दिल्ली) द्वारा Rs 24000/–
48. कर्नल आलोक चतुर्वेदी। (चंद्रपूर/ ग्रेटर नॉएडा) Rs. 5000/–
49. डॉ दिवाकर नाथ चतुर्वेदी, भोपाल ने पुरा कन्हैरा में निर्मित जौनमाने शादी हॉल के शुभ अवसर पर – 12000/–
50. स्व. श्रीमती संध्या मिश्र की स्मृति में उनके पति श्री संजय मिश्र (मैनपुरी/कोटा/मुंबई) द्वारा – 12000/–
51. श्री अतुल चतुर्वेदी, लखनऊ – 2001
52. श्री पंकज चतुर्वेदी, टोंक ने अपने पिता स्व. महावीर प्रसाद जी की स्मृति में – 5000/–
53. स्व. श्री कमलकांत जी की स्मृति में श्रीमती निशा जी,नोएडा द्वारा –24000/–
54. श्री शिव चतुर्वेदी,कोटा ने अपने पुत्र स्व. श्री उमेश चतुर्वेदी की द्वितीय पुण्य स्मृति में – 8000/–
55. मकर संक्राति के पावन पर्व पर हैदराबाद शाखा सभा द्वारा 70001/–
56. मिश्रा परिवार,कम्पिल 11000/–
57. सुश्री सुनीता एवम् शालिनी फरौली 1000/–
58. मिश्रा परिवार, लाल मठिया, मैनपुरी द्वारा – 7400//
59. श्री संतोष चतुर्वेदी (मैनपुरी/ साहिबाबाद) – 1100/–
60. ले. ज. श्री विष्णु कांत चतुर्वेदी संरक्षक महासभा। (फ़तेहगढ़ /नॉएडा) –12000/–
61. श्री मनीष जी सुपुत्र श्री यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, गुरुग्राम – 12000/–
62. श्री हर्ष मोहन द्वारा पूज्य पिता स्व. हरि मोहन चतुर्वेदी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर 6000/–
63. श्री कमलेश चंद्र चतुर्वेदी @ गोपाल जी झाँसी द्वारा – 12000/–
64. श्रीमती ज्योति चतुर्वेदी (तरसोखर / Atalanta। USA) – 12000/–
65. श्री आशीष चतुर्वेदी दुबई – 12000/–
66. श्रीमती करुणा एवम् श्री अश्वनी चतुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा अपने पुत्र मोहित कीं चतुर्थ पुण्यतिथि तथा भतीजे विभांशु की स्मृति में – 12000/–
67. डॉ. श्री राकेश चतुर्वेदी (तालगाँव / मथुरा) द्वारा – 5000/–
68. श्री प्रहलाद नारायण जी की स्मृति में श्रीमती शकुंतला जी,आगरा द्वारा –1500/–
69. खुशी चतुर्वेदी,आगरा के 19 वे जन्मदिन के अवसर पर –1000/–
70. श्री। सुब्रत चतुर्वेदी नॉएडा अपनी पत्नी की द्वितीय पुण्य तिथि पर– 25000/–
71. श्री मुरलीधर चतुर्वेदी, मथुरा – 6000/–
72. डा. सतीश चतुर्वेदी (होलीपुरा /नागपुर) द्वारा विवाह कीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य हेतु 1,00,000/–
73. श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (फरौली/नागपुर) द्वारा अर्धांगिनी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में –12000/–
74. श्री राकेश चतुर्वेदी (बरेली) – 11000/–
75. श्री अजय चौबे,भोपाल – 12000/–
76. श्रीमती शोभा चतुर्वेदी,दिल्ली 6000/–
77. श्री संजीव चतुर्वेदी जयपुर द्वारा अपने पुत्र चि रित्विक के विवाह के उपलक्ष्य में रु 12000/–
78. श्रीमती गीता चतुर्वेदी। द्वारा स्व। कृष्णकांत जी (मैनपुरी /अहमदाबाद) –12000/–
79. श्री मयंक एवं श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी (फरौली/ भोपाल/कुवैत) – 24000/–
80. श्री अनिरुद्ध एवम् श्रीमती देवयानी चतुर्वेदी USA – 12000/–
81. श्री कार्तिक – श्रीमती मिशी चतुर्वेदी USA – 12000/–
82. डॉ. मीनाक्ष चतुर्वेदी भोपाल –5000/–
81. स्व. श्रीमती आभा चतुर्वेदी, अब्बो (जहांगीरपुर/कोलकाता) की स्मृति में श्री रामेश्वर चतुर्वेदी द्वारा – 2100/–
82. श्रीमती नर्वदा चतुर्वेदी (होलीपुरा) द्वारा अपने पति स्व. वीर बहादुर चतुर्वेदी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर – 24000/–
83. श्रीमती अनंदिता सौमित्र चतुर्वेदी (फतेहगढ़/इटावा) द्वारा अपने पति स्व. सौमित्र चतुर्वेदी की नवमी पुण्यतिथि के अवसर पर – 12000/–

वित्तीय वर्ष 2021–22 में
प्राप्त सहयोग
Rs.11,55,478 /–

*वित्तीय वर्ष 2021–22 में अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत हस्तांतरित राशि–
रू.8,65,800/–*

सभी को विनम्रतापूर्वक आभार
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Mob. 9871170559

संपादक के नाम पत्र

बन्धुवर पालागन,

यूं तो चंद्रिका के प्रति समाज का आकर्षण सदैव ही रहा है, परंतु कुछ समय से प्रत्येक माह चंद्रिका नये नये रूप में प्राप्त हो रही है,जो चंद्रिका को और भी रौचकता प्रदान कर रहा है। जिसके लिए संपादक जी व उनकी टीम बधाई व सराहना की पात्र हैं।

इसी क्रम में मार्च माह में समाज के होली सुरों के सरताजों को कवर पृष्ठ पर स्थान देना और साथ हि वर्तमान में जो इस विधा को आगे ले जा रहे हैं। उनसे अवगत कराना एक अत्यंत सराहनीय प्रयास है।

इस प्रकार से समाज के युवाओं को होली गायन व पारम्परिक विद्याओं से जोड़ने में अवश्य प्रोत्साहित करेगा।

युवाओं को इस प्रकार की परम्पराओं से जोड़े रखना अति आवश्यक है, जिसके लिए लोकल सभाओं व मंचों को भी प्रत्येक स्थान पर होने वाले होली मिलन व अन्य आयोजनों में युवाओं के लिए प्रतियोगिताओं के माध्यम से जोड़कर आगे लाया जा सकता है। फरवरी माह में हुई महासभा कार्यकारणी बैठक में कलेण्डर पर चर्चा में अधिकाधिक परिवारों को कलेण्डर पहुंचाने के लिए चंद्रिका में प्रकाशित करना एक अच्छा विकल्प है।

– **आशीष चतुर्वेदी,** आगरा (युवा प्रकोष्ठ)

–0–

प्रिय सम्पादक जी

इस बार की चतुर्वेदी चंद्रिका देखकर मन प्रफुल्लित हो गया है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर होली गायन के मुख्य बांधवों की तस्वीरें देखकर बहुत अच्छा लगा।सम्पादक महोदय ने बहुत सुन्दर तरीके से इस बार की पत्रिका सजाया है। जिन बांधवों ने होली गायन में अपनी मुख्य भूमिका निभाई है और जो अब हम लोगो के साथ नही है। उनको मुख्य पृष्ठ पर स्थान देकर उन्हें बहुत बड़ा सम्मान दिया है और समाज की इस धरोहर को जो बान्धव आगे बढ़ा रहे हैं, उनकी फोटो को छापकर बहुत सराहनीय कार्य किया है। आपकी संपादकीय का कोई जवाब नही है बहुत शानदार तरीके से और बहुत खूबसूरत शब्दों में सरल भाषा के साथ लिखी रहती है। चतुर्वेदी चंद्रिका दिन प्रतिदिन और निखरती जा रही है। चंद्रिका का प्रकाशन समय से होकर समय से पाठकों को मिलती है। समाज और पत्रिका के प्रति लगन आपके कार्य से लोगो को दिखती है। पत्रिका का अब तो हर माह बेसब्री से इन्तज़ार रहता है। आप ऐसे ही अपनी सेवाएं समाज को देते रहे। नवसंवत्सर की शुभकामनाओं के साथ

– **संजय मिश्रा,** कानपुर

–0–

प्रिय शशांक भाई पालागन मार्च माह का चतुर्वेदी चंद्रिका का अंक देखकर मन बहुत प्रफुल्लित हुआ। होली गायकों को मुख्य पृष्ठ पर स्थान देने के लिए बहुत–बहुत आभार। समाज की इस विधा के संवाहकों को प्रमुखता दिए जाने पर हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस तरह का प्रयास शायद चंद्रिका में प्रथम बार हुआ है। इस क्रम को सतत बनाए रखिएगा। होली गायन व वादन विधा के हमारे दिवंगत बंधुओं व उज्ज्वल वर्तमान को देख मन बहुत प्रसन्न हुआ। एक पुनः एक बार बहुत–बहुत बधाई।

– **प्रणव चतुर्वेदी,** कानपुर

–0–

जब से चतुर्वेदी चंद्रिका का संपादन भाई शशांक जी को सौंपा गया है। पत्रिका में प्रतिमाह निरंतर निखार आ रहा है। भाई शशांक का कड़ा परिश्रम परिलक्षित हो रहा है। इस बार मार्च अंक में होली गायकों का कवर पृष्ठ पर बहुत सुंदर चित्रों को मुद्रित किया गया है। हर बार एक नई कला देखने को मिल रही है। पत्रिका की पृष्ठों का मिलान सुंदर हो रहा है। गलतियां नगन्य है। सम्पादकीय में भी बहुत निखार आ गया है। पत्रिका की मुद्रण व्यवस्था सही है एवं पत्रिका समय से वितरित हो रही है। निसंदेह संपादक जी व सम्पूर्ण टीम प्रशंसा के पात्र हैं। डॉ. प्रदीप जी का मार्गदर्शन सराहनीय है। भविष्य में भी आप पत्रिका में नित नए प्रयोगों से समाज को रोमांचित करते रहेंगे।

– **प्रदीप चतुर्वेदी, लालन** (आगरा)

–0–

पालागन, समाज में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनको सम्मानित करके सम्मान भी सम्मानित हो जाता है। आप भी इसी प्रकार का व्यक्तित्व हैं, एवं इस प्रकार के अनेक पुरस्कारों हेतु सर्वथा काबिल व योग्य भी। सादर

– **सुबोध चंद्र चतुर्वेदी,** लखनऊ

अपील (गुल्लक योजना, 10.03.2022)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, सभापति, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ने सन 2020 में महासभा की सहायतार्थ तथा आर्थिक स्वावलम्बन के लिए एक अनूठी गुल्लक योजना का शुभारम्भ किया था। इस के माध्यम से कामधेनु की पर्याय गाय की प्रतिकृति क्री एक गुल्लक सभी बांधवों क्रो प्रति परिवार एक के हिसाब दी गयी थी। इस गुल्लक में बांधवों द्वारा पूजा में चढ़ाए पैसे, उठाऊने के पैसे, भगवान के लिए निकाल कर पैसे आदि आदि अवसरों पर थोड़ी थोड़ी मात्रा में एकत्र की गयी धन राशि को संग्रहित कर मकर संक्रांति (जनवरी मास) तथा दुर्गा पूजा के समय महासभा के अकाउंट में सीधे जमा करने का आग्रह किया गया था।

इसी श्रृंखला में दीपोत्सव के समापन पर महासभा क्रो गुल्लक प्राप्त धन राशि निम्न प्रकार से है :-

1. डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी,दिल्ली – 2100/-
2. श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी,भोपाल -1001/-
3. श्री धीरेंद्र नाथ चतुर्वेदी, कानपुर – 1180/-
4. श्री भरत कुमार चतुर्वेदी, रिषड़ा - 1000/-
5. श्री पदम कुमार चतुर्वेदी, लखनऊ - 1000/-
6. श्री अभयराज चतुर्वेदी, गुरुग्राम - 1000/-
7. श्री संजय मिश्रा, कानपुर. -1001/-
8. श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल - 1000/-
9. श्री अखिलेश चतुर्वेदी,लखनऊ - 2240/-
10. श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी, कासगंज -1000/-
12. श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी,दिल्ली -3100/-
13. CA श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी नागपुर -2100/-
14. श्री विशाल चतुर्वेदी, पुरा - 1100/-
15. श्री दिलीप चतुर्वेदी, लखनऊ 500/-
16. श्री ललित चतुर्वेदी, लखनऊ 2000/-
17. श्री विपिन चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-
18. श्री भुवनेश चौबे, गोंदिया -1100/-
19. श्री प्रदीप चतुर्वेदी, आगरा - 500/-
20. श्री पुनीत चतुर्वेदी, आगरा -500/-
21. श्री आशुतोष चतुर्वेदी, कानपुर -1100/-
22. श्री रोमित चतुर्वेदी,कानपुर -550/-
23. श्री भारत चतुर्वेदी,कानपुर -550/-
24. श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, नोयडा - 1470/-
25. प्रदीप चतुर्वेदी (संजू), गाज़ियाबाद -1000/-
26. श्री कमलेश चन्द्र पांडे, नोयडा -1100/-
27. श्री नील कमल चतुर्वेदी, कोलकाता -2500/-
28. श्री खगेश चतुर्वेदी, आगरा 5100/-
29. श्रीमती बीना मिश्रा, हैदराबाद 2400/-
30. श्री करूणेश चतुर्वेदी, ग्वालियर 1500/-
31. डॉ. मनोज चतुर्वेदी, ग्वालियर - 1000/-
32. श्री दिवस चतुर्वेदी, लखनऊ - 1100/-
33. श्री योगेंद्र नाथ चतुर्वेदी, ग्वालियर 1000/-
34. श्री अविनाश चंद्र चतुर्वेदी,कानपुर -2001/-
35. डॉ. मनीष चतुर्वेदी,कोटा - 1011/-
36. श्री पंकज चतुर्वेदी मुंबई 1100/-
37. श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी, ग़ाज़ियाबाद - 2061/-
38. श्री सुरेश चंद्र चतुर्वेदी, कोलकाता - 2100/-
39. श्री अभिषेक चतुर्वेदी, ग्वालियर -500/-
40. श्री अनिल चतुर्वेदी, सूधे बाबू,आगरा -1000/-
41. श्री चंद्रकांत चतुर्वेदी, हैदराबाद - 2100/-
42. श्री सौरभ चतुर्वेदी, लखनऊ - 501/-
43. श्रीमती रश्मि भरत चतुर्वेदी, लखनऊ - 250/-
44. श्री अरुण चतुर्वेदी, नागपुर -2100/-
45. श्री मोहित चतुर्वेदी - 1100/-
46. श्री अतुल चतुर्वेदी,लखनऊ - 1000/-
47. श्री ओंकार नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ) -3250/-
48. श्री दीपक मिश्रा-कीर्ति मिश्रा (कंपिल/हैदराबाद) -1100
49. श्री अंशुमान चतुर्वेदी, जयपुर - 1400/-
50. श्री हरेश चतुर्वेदी, आगरा - 1000/-
51. श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी, ग्वालियर - 1100/-
52. श्री फनींद्र नाथ चतुर्वेदी कानपुर -2151/-
53. अपने जन्मदिन के अवसर पर अखिलेश जी,लखनऊ द्वारा - 2100/-
54. अनुराग चतुर्वेदी, गुरुग्राम -1000/-
55. आनंद चतुर्वेदी, आगरा - 1500/-
56. कु. इशिता चतुर्वेदी, कोटा 551/-

कुल जमा राशि 76,676 /-

आप से निवेदन है कि महासभा क्रे खाते में गुल्लक योजना की राशि जमा कर कृतार्थ करे।

Account विवरण :-
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account no : 1006238340
IFSC CODE : CBIN0283533
Branch : Central bank of India
Anand Vihar Delhi
विनम्र अग्रिम धन्यवाद
निवेदक : मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा , 9871170559

मैथी-बहुपयोगी औषधि

- सुचित्रा सिकन्दरपुरिया, लखनऊ

मैथी एक वनस्पति है। जिसका पौधा दो फुट तक होता है। जिसमें हरे पत्ते, छोटे सफेद फूल-फली होती हैं। जिसमें सुनहरे भूरे रंग के बीज होते हैं। मैथी का उपयोग आहार में सब्जी, मसाले, पेस्ट, सूप, चाय, तेल आदि के रुप में किया जाता है। पौष्टिक और स्वास्थ्य वर्धक मैथी आपकी तरह-तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। इसकी खेती भारत के साथ ही पश्चिम एशिया, भूमध्य क्षेत्र, दक्षिण यूरोप में बहुतायत में होती है।मैथी को संस्कृत में मेथिका, अंग्रेजी में फेनुग्रीक तथा वनस्पति विज्ञान में ट्रेयिगोनेला फोएनम ग्रीकम नाम से जाना जाता है। आयुर्वेद में मैथी का औषधीय उपयोग प्राचीन काल से होता रहा है। मैथी के दानों की तासीर गर्म होती है। इसलिए मैथी के दानों को कुछ समय के लिए पानी में भिगो कर रखे। फिर इसका उपयोग करें। मैथी की अन्य प्रजाति कसूरी मैथी एवं वन मैथी का भी औषधि के रूप में होता है। आयुर्वेद के अनुसार मैथी एक प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट एवं एंटीबायोटिक, रक्तशोधक औषधि है। मैथी में प्रोटीन, विटामिन,आयरन, पोटैशियम फास्फोरस, कैल्शियम आदि खनिज-लवणों का भंडार है। यह शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। ह्रदय रोग एवं रक्तचाप को नियंत्रित करती है। पाचन संबंधी दोष दूर करती है। यह कृमि नाशक एवं कफरोग निवारक भी है।

आयुर्वेदिक चिकित्सक से परामर्श करने के बाद मैथी के औषधीय उपयोग कर सकते हैं :

1...हाथ-पैर के दर्द में मैथी को घृत में भूनकर पीस कर गुड़ की चासनी में डालकर थोड़ा घृत मिलाकर घोंट कर छोटे-छोटे लड्डू बना लें,15-20 दिनों तक 1-1 लड्डू सेवन करें।

2...जीर्ण आमातिसार में 5 ग्राम मैथी दाना चूर्ण,1ग्राम सोंठ,10ग्राम गुड़ तथा एक गिलास मठ्ठा में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

3... पेचिश में 10ग्राम मैथी दाना पीसकर 150 ग्राम दही में मिलाकर दिन में दो-तीन बार लेने से लाभ होता है।

पथ्य के रूप में उबालकर ठंडा किया पानी, नींबू पानी,पका केला,दही के साथ हल्का आहार ही लें।

4...प्रदर रोग में 5 ग्राम मैथी दाना चूर्ण थोड़े गुड़ एवं घृत के साथ मिलाकर सुबह-शाम 7-10 चबा-चबाकर खाने से लाभ होता है।

5...मधुमेह में 20 ग्राम मैथी दाना रात में एक गिलास पानी में भिगोकर सुबह पीसकर एवं छानकर नित्य एक महीने तक सेवन करने के बाद ब्लड जांच करें। पथ्य के रूप में चावल, आलू, शंकर कंद,मैदा, चीनी, गुड़,केला से परहेज करें।

6... जोड़ों की सूजन में मैथी के ताजे पत्तों को पीसकर थोड़ा गर्म कर पुल्टिस बनाकर बांधने से लाभ होता हैं।

7... रक्तस्रावी बवासीर में मैथी दाना पीसकर 15 ग्राम चूर्ण एक गिलास पानी में उबालकर जब पानी शेष रहे,तब ठंडा होने पर कुछ दिन पीने से लाभ होता है।

8...सर्दी, ज़ुका एवं बुखाऊ में 10 ग्राम मैथी दाना चूर्ण को एक चम्मच शहद व 2 ग्राम नींबू रस के साथ कुछ दिन लेने से लाभ होता है।

9... बालों का झड़ना, सफेद होना,बालो का न बढ़ना,रुसी होना जैसी बालों के स्वास्थ्य समस्याओं में मैथी के पत्तों को नारियल पानी में मिलाकर पेस्ट बना कर नियमित रूप से बालों में लगाने से लाभ होता हैं।

10... कील-मुंहासे के दाग-धब्बे दूर करने के लिए मैथी के ताजे पत्तों को पीसकर हल्दी चूर्ण को मिलाकर चेहरे पर नियमित लेप लगाने से दाग-धब्बे मिटाने में लाभ होता है, जिससे त्वचा निखरती है।

11... ह्रदय रोग में पानी में भिगो कर मैथी दाना का नियमित सेवन करने से मैथी में मौजूद पौटेशियम तत्व रक्तचाप एवं ह्रदय गति को नियंत्रित-संतुलित रखने में मदद करता है।

12...गठिया-संधिवात में 5 ग्राम मैथी दाना पानी के साथ सुबह शाम निगल लें या 30 ग्राम अंकुरित मैथी दाना नित्य सुबह सेवन करने से लाभ होता है।

13... स्तनपान कराने वाली महिलाओं को मैथी के लडडू खिलाने के बाद गौ दूध में शतावरी चूर्ण एवं सफेद जीरा 3-3 ग्राम सेवन करने से मां का दूध बढ़ने लगता है।मैथी में डावोस्जेनिन नामक तत्व दुग्ध बढ़ाने में मदद करता है।

14. कब्ज में एक चम्मच मैथी दाना प्रतिदिन सुबह शाम पानी के साथ लेने से लाभ होता है या 3 ग्राम मैथी दाना चूर्ण गुड़ के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

15. बहुमूत्र की समस्या होने पर मैथी के ताजे पत्तों के एक कप रस में 2 ग्राम कत्था एवं 4 ग्राम देशी खांड़ मिलाकर नित्य पीने से लाभ होता है।

आयुर्वेद के प्रचलित उपचार में मसालों एवं अन्य खाद्य पदार्थों का सेवन काफी लाभकारी माना जाता है, परन्तु किसी भी स्वास्थ्य समस्या का समाधान चिकित्सक के परामर्श से ही करना चाहिए, क्योंकि स्वचिकित्सा हानिकारक हो सकती है।

यमपुरी में हड़कंप

- अर्चना चतुर्वेदी

उन दोनों यमदूतों का आज साप्ताहिक अवकाश था सो वे आराम फरमा रहे थे और टीवी पर फिल्म का आनंद ले रहे थे। वैसे तो यमदूतों का काम कभी खत्म नहीं होता पर जबसे बॉस यमराज जी ने नए यमदूत नियुक्त किए हैं हफ्ते में एक छुट्टी सबको मिल जाती है पर अपने टारगेट सबको पूरे करने होते हैं। हाँ,तो मैं बता रही थी कि यमदूत फिल्म देख रहे थे तभी ब्रेक आया और विज्ञापन आने लगे। अचानक एक विज्ञापन देखकर परेशान हो गए एक बोला, यार यह तो बड़ी गड़बड़ है ,यदि ये सचमुच काम करता है तो अपने काम पर तो बहुत असर होगा, खासकर भारत भूमि में तो टारगेट पूरे करना मुश्किल हो जाएगा। चलो बॉस को बताते हैं जल्दी से नहीं तो यह खत्म हो जाएगा। दूसरा बोला। दोनों यमदूत बॉस यानी यमराज जी के कक्ष की ओर भागे दरवाजा खटखटा कर अंदर प्रवेश किया। यमराज जी जूस पी रहे थे और रानी साहिबा अपना फेवरेट सीरियल देख रही थी।दोनों दूतों को एक साथ अपने कक्ष में देखकर यमराज सर ने पूछा, क्या हुआ आज तो तुम्हारी छुट्टी है फिर इतने हड़बढ़ाते से यहां क्या कर रहे हो?

सर बात ही कुछ ऐसी है ....फिर कुछ रुककर हड़बड़ाते हुए ....जरा चैनल नंबर 123 लगा कर देखिए क्या अनर्थ हो रहा है।दोनों दूत एक साथ बोले।

अरे भाई उस चैनल का तो पता नहीं, पर इस वक्त रानी साहिबा अपने पसंदीदा सास बहू सीरियल देख रही है और अभी चैनल बदलने की कोशिश भी की तो सचमुच अनर्थ हो जाएगा। ऐसा क्या आ रहा है ? बता दो या फिर हम भी तुम्हारे कक्ष में चल कर ही देख लेते हैं।

कहकर यमराज जी दूतों के कमरे कमरे की ओर चल दिए। यमराज दूतों के कमरे में पहुंचे तो देखा वहां टीवी चल रहा है और हनुमान जी का युद्ध चल रहा है काले कपड़े वाले किसी कुरुप से राक्षस के साथ।

यह कौन है इतना बदसूरत – सा और कितने पुराने फैशन के कपड़े पहने हैं, जिससे हनुमान जी लड़ रहे हैं ? हनुमान जी को

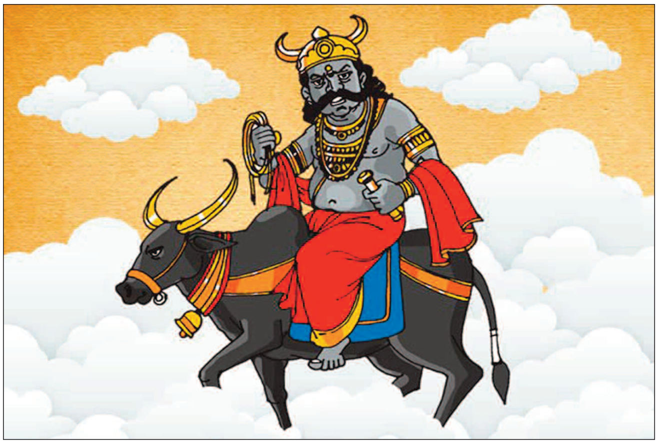

कितना स्मार्ट बॉडी बिल्डर टाइप दिखाया गया है।प्रभु ये आप है ध्यान से सुनिए ,यमराज ने ध्यान से देखा..... सुना तो उनका पारा गरम हो गया और गुस्से में बोली यह किसकी साजिश है? हमें यूँ बदसूरत दिखाने की और यह क्या नया यंत्र है जिसे यदि कोई मनुष्य पहन लेगा तो उसकी रक्षा स्वयं हनुमान जी करेंगे ऐसे में सभी यंत्र पहनकर अपनी रक्षा हनुमान जी से करवा लेंगे और पृथ्वी लोक पर भीड़ बढ़ जाएगी और हमारा टारगेट कैसे पूरे होंगे?

जल्दी से मंत्री जी को बुलाओ आपातकालीन बैठक के लिए। मंत्री जी सुनकर दौड़े –दौड़े आये वो बुरी तरह हाफ रहे थे फिर बोले क्या हुआ प्रभु ? इस वक्त कैसे याद किया और यहाँ दूतों के कमरे में क्यों बुलाया आज तो छुट्टी है ना। मंत्री जी हम यम लोग वासियों की कोई छुट्टी नहीं होती और आपसे कितनी बार कहा है जिम में जाया करो कितनी तोंद निकल रही है और किस कदर हांफ रहे हैं आप।आप जरा देखिए पृथ्वी लोक पर क्या हो रहा है? यमराज ने टीवी की तरफ इशारा किया।

मंत्री ने चुपचाप देखने लगे फिर बोले महाराज यह तो सचमुच चिंता का विषय है। आपको बाकी बहुत बदसूरत दिखाया गया है और तो और भैंसे पर बिठाया है यदि पेटा वालों को पता चला तो आप पर जानवरों की सवारी करने के कारण केस कर देंगे, हो सकता है आपको जेल भी हो जाए।

तुम्हारा दिमाग खराब है मंत्री जी यमराज चिल्लाए, यहां पूरा विभाग खतरे में है और आप को भैंसे की पड़ी है। अब किसी ने

पृथ्वी वासियों को अपडेट ही नहीं किया गया, तो वह क्या करें? उन्हें क्या पता कि हम अपने प्राइवेट प्लेन से जाते हैं और पृथ्वी वासियों से ज्यादा लेटेस्ट फैशन के कपड़े पहनते हैं। आप यह देखिए यहां जो यंत्र बिक रहा है ,जिसे पहनने से स्वयं हनुमान जी हम से युद्ध करेंगे। यदि ऐसा हुआ तो हम किसी के प्राण ले ही नहीं पाएंगे फिर तो यमलोक में ताला ही लगाना पड़ेगा, पृथ्वीलोक के डॉक्टरों की वजह से पहले से ही प्राण लेने का प्रोफेशन कमजोर पड़ गया है। आप की भी क्या जरूरत रह जाएगी फिर।कोई उपाय बताइए क्या करें ?

महाराज आप इसे रिकॉर्ड करिए और देवताओं की मीटिंग बुलाइए वहीं कुछ हल निकालेंगे ,

मंत्री जी ने कुछ देर सोच कर जवाब दिया।

शाम को सभी देवता यम की सभा में उपस्थित थे उन्होंने पूछा क्या हुआ यमदेव यू आपातकालीन सभा क्यों बुलाई गई है

जी देवगण बताता हूँ यम बोले।

वो रिकॉर्डिंग चलाई जाए यम ने आदेश दिया।सबने वह फिल्म देखी और बोले यमराज जी यदि यह सूचना है तो वाकई चिंता का विषय है।

अभी सब सोच में पड़े ही थे कि नारद जी ने प्रवेश किया। नारायण....... नारायण क्या हुआ प्रभु आज सब देवता गण यहाँ क्यों है ? कोई बड़ी घटना हुई क्या? अरे नारद जी आप तो पृथ्वी लोक पर विचरण करते रहते हैं ,आपको तो पता होगा वह सूचना कि मनुष्यों ने ऐसा यंत्र बना लिया है कि अब यमराज उनके प्राण नहीं ले पाएंगे स्वयं हनुमान जी उनकी रक्षा करेंगे।विष्णु भगवान चिंतित होते हुए बोले।

अच्छा यह बात है। हा- हा- हा। हा -हा-हा........ नारद जी हँसते जा रहे थे और सभी देवी- देवता परेशान उनका मुँह ताक रहे थे।

क्या हुआ नारद जी हंस क्यों रहे हैं।

अरे महाराज हंसू नहीं तो क्या करूं इन मनुष्यों की चालाकी देखो एक दूसरे को तो बनाते ही हैं आपको भी बना डाला हा -हा -हा......।

अरे भाई क्या बना डाला ?

मूर्ख और क्या।

मूर्ख...... क्या बक रहे हो नारद ,सभी देवता गुस्से में बोले।

अरे प्रभु ,सही कह रहा हूँ ये सूचना नहीं विज्ञापन था और मनुष्य ऐसे बहुत से यंत्रों के तेलों के और ना जाने कैसे-कैसे झूठे विज्ञापन दिखाकर पृथ्वीलोक के लोगों को मूर्ख बनाते हैं। कभी स्वयं को भगवान कहते हैं और कभी अमर होने के उपाय बताते हैं।यह सब तो उनके नए नए बिजनेस आइडिया हैं।लोग ऐसी फालतू लोगों की बातों में आकर खूब धन लूटाते हैं।आप देवगण भी आ गए ना झांसे में तो आम लोगों की क्या बिसात है।अब आप ही सोचिए भला हनुमान जी के पास इतना वक्त कहां है ? वो तो स्वयं राम जी की सेवा में इतने व्यस्त रहते हैं कि यहाँ भी नहीं आ पाए ? वो भला यमराज जी के काम में दखलंदाजी कैसे करेंगे? और किस-किस के प्राणों के लिए लड़ते फिरेंगे? नारद जी हँसते हुए बोले।

पर यह तो सरासर गलत है ना ,इस पर रोक लगनी चाहिए, हनुमान को पता लगेगा तो वो कितने नाराज होंगे ?सारे देवता बोले, कैसे रोक लगेगी पृथ्वी लोक पर तो कोई कानून नहीं इसे रोकने का और मृत्यु लोक में तो मरने के बाद ही स्वर्ग -नरक मिलेगा। हाँ ,हनुमान जी को पता लगा तो वो जरूर पटक डालेगे इन इंसानों को।

आप देवता ही कुछ सोचिये की जीते जी ने इन्हें कैसे सजा मिले ?नारायण..... नारायण नारद जी चल दिये।

हम ऐसा करते हैं कुछ दिन के लिए अपने बुद्धिमान मंत्री जी और कुछ दूतों को पृथ्वी लोक में भेज देते हैं।वहाँ रहकर ही वो ऐसे लोगों पर रोक लगे,इस पर काम करेंगे और वहां के मनुष्यो को सावधान भी करेंगे कि वह इन झूठे विज्ञापनों के झांसे में ना आये। यमराज जी ने कहा।

हाँ हाँ यह सही रहेगा देवताओं ने हामी भरी .....सभा खत्म हुई और सब चले गए।

मंत्री जी भी पृथ्वीलोक प्रस्थान कर गये।

कुछ दिन बाद.........

एक दिन सुबह सुबह मंत्री जी का यमलोक में प्रवेश हुआ।

अरे मंत्री जी आप आ गए ,बड़े खुश नजर आ रहे हैं लगता हैं। लगता है काम हो गया ?और आपके हाथ में यह सामान क्या है?यमराज जी ने प्रश्नों की झड़ी लगाई।

अरे महाराज ये हमारी तोंद कम करने के लिए बैल्ट है और कुछ पेय पदार्थ जो हमारी बॉडी बनाएंगे।और एक खुशी की बात और है अब हमने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि किसी भी सामान की डिलीवरी यमलोक में भी होगी और हम ऑर्डर आसानी से कर सकेंगे।

यमराज जी हैरान परेशान से होकर बोले पर तुम्हारे साथ कुछ दूत भेजे थे वो कहाँ हैं?

अरे महाराज दूतो ने वहाँ की कम्पनियाँ अच्छी तनखाह

में ज्वाइन कर ली हैं....... वही तो पृथ्वी से यमलोक में सामान पहुंचाएगे।

ये सुनकर यमराज जी ने अपने सिर पर हाथ रख लिया और आज तक उसी मुद्रा में हैं।

टी.एन. चतुर्वेदी, दतिया-एक व्यक्तित्व

डॉ.अणिमा चतुर्वेदी, जयपुर

क्या भूलूं ... क्या याद करूँ

शायद स्वार्थी हूँ मैं।पापा याद आते हैं,जब कक्षा के समय हिंदी या अंग्रेजी व्याकरण सम्बन्धी कोई संशय होता है,जब जयपुर से कहीं बाहर जाना होता है,जब सर्विस सम्बन्धी कार्यों के लिए कहीं अनजान जगहों पर जाना होता है,जब सर्विस सम्बन्धी किसी भी प्रकार की कोई समस्या समक्ष आती है,या जब मन किसी भी प्रकार से दुखी होता है।पापा......एक शब्द में निहित था मेरी हर समस्या का हल। खुद को बहुत टूटा महसूस करती हूँ, जब ऐसी समस्याओं का सामना खुद ही करना पड़ता है। कभी बैठती हूँ तो लगता है मेरी जिंदगी का नब्बे प्रतिशत मेरे माँ-पिता की ही दें है चाहे वो संस्कार हो,शिक्षा या कुछ और । एक ही कॉलेज का विद्यार्थी होने के कारण अक्सर छोटे भाई के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती थी, पापा एक ही विषय पर एक को पक्ष में और दूसरे को विपक्ष के बिंदु इतने शानदार तैयार कराते थे,कि हमारी स्कूल और कॉलेज लाइफ में किसी भी साहित्यिक प्रतियोगिता में हमसे आगे कभी भी कोई नहीं हो पाया। इतिहास, धर्मशास्त्र, आर्थिक, राजनैतिक, गणितीय, आंग्ल, सामाजिक हर विषय पर इतनी मजबूत पकड़ रखते थे, कि दूसरे देशों के लोग भी उनके पास घर भेजे जाते थे, कभी न्यायालय तो कभी मंदिर तो कभी पुरातत्व विभाग द्वारा। इतना सब होते हुए भी सहजता बरक़रार थी, अमिताभ अभिषेक का...कजरारे कजरारे गाना देखकर उनके चेहरे पर जो मुस्कान आती थी, वह अविस्मर्णीय है। पूरे खानदान के ताऊ ताई, चाचा चाची, बुआ फूफा, और उनकी संतानों को देखकर एक अलग ही सुख की अनुभूति होती थी उन्हें। किसी भी कार्ड में किसी का भी नाम छूटना नहीं चाहिए। दतिया में हमारे परिवार तो थे नहीं, मुझे बहुत बुरा लगता था कि पापा दूर रहने वालो के जाने पर भी अपने पूरे बाल क्यों हटवा देते हैं,हमारा मंदिर बंद क्यों हो जाता है,घर में पूरे साल तक त्यौहार क्यों नहीं मनाये जाते,...लेकिन माँ-पापा दोनों हर दायित्व का निर्वाह मिल जुल कर करवाते थे, कि कोई रिश्तेदार नहीं,लेकिन हमारे पूर्वज और भगवान हमें हर पल देखते हैं। और वास्तव में यही हैं संस्कार। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पता नहीं क्या ज्ञान और क्या जरूरतें और कितने ही शौक पूरे करा देते थे सबके। मैनपुरी में ताउजी जब आँखों से असमर्थ हो गए,पूरी जिम्मेदारी से उनका खर्च उठाने लगे,ताउजी की असमर्थता का कई लोगों ने फायदा भी उठाया,लेकिन शायद दूसरे भरत थे पापा, जिन्होंने ताउजी की खातिर हर समस्या को सहज माना और किसी के भी बुरे में विश्वास नहीं किया।जमीन-जायदाद,के लालच से भी कोसो दूर पापा मैनपुरी और दतिया को एक गाड़ी के दो पहिये मानते हुए हर प्रकार के कर्तव्यों का निर्वाह उम्रभर करते रहे। पापा एक बहुत अच्छे दामाद भी थे। सामान्यतया यह देखा जाता है कि ससुराल में टेढ़ापन दिखाना दामादों की आदत में होता है,लेकिन पापा जिन्दगी भर डैडी यानि माँ के पिता की शिक्षाओं, हस्तलेखन,ज्ञान से परिपूर्ण पत्रों,नानी के हाथ के व्यंजनों और सालियों की योग्यताओं की तारीफ़ करते रहे। मीसाबंदी रहने के दौरान माँ पापा ने जो भी कष्ट भोगे, उन्हें हम तीन भाई बहनों को कभी नहीं बताया, हाँ, जिनका जन्म पहले हो चुका था,उन्हें तो सब पता ही था। इस दौरान उन्होंने अगणित कवितायेँ, लेख आदि लिख डाले,जिन्हें यदि मौका मिलता तो साहित्य जगत में स्थान पाते, पर अफ़सोस कि हम सामान्य जीवन जीने वालों को सामान्यतः समझ ही नहीं पाते। कितनी ही बार अटल बिहारी बाजपेयी जी जैसे नेताओ की सभा को पापा ने घंटों साधा,जबकि उनके आने में देरी हुई, मुलायम सिंह जी जैसे नेताओ के पार्टी स्वीकारने के आग्रह को ठुकराया और कितनी ही बार घर पर आने वाले मंत्रियों से पार्टी सम्बन्धी गहन वार्तालाप किये,लेकिन तारीफ़ की बात ये, कि राजनैतिक जीवन को सामाजिक जीवन के बीच में नहीं आने देते थे पापा। हमारे यहाँ हर दल के मंत्री का सम्मान एक सा ही होता था,सिद्धांतवादी पापा किसी से बेबजह फायदा नहीं लेते थे,लेकिन जब कोई बेबजह हक मारता था, तो उसे सहना भी उन्हें नहीं आता था। समायोजन में जिन्दगी की सर्वश्रेष्ठ पूँजी विद्यमान है-ऐसा उनका मानना था।आठ उच्च सरकारी पदों को ठुकराकर रोज कुआ खोदकर रोज पानी पीना उन्हें स्वीकार्य था,लेकिन स्वाभिमान और सिद्धान्तवादिता उनके रोम-रोम में विद्यमान थी। एक अच्छे पिता,गूगल गुरु, सदैव सही सलाह देने वाले,और न्यायप्रियता में भरोसा रखने वाले पापा!.. हर दिन,हर पल कमी महसूस होती है आपकी। इसमें कोई शक नहीं कि हमारी माँ ,अपनी तरफ से पापा की हर कमी पूरा करने का प्रयास करती हैं, लेकिन फूल और पत्ती की सुन्दरता एक-दूसरे के अभाव में अपूर्ण होती है। पापा मेरे आदर्श थे,मेरी हर जिद पूरी कराने वाले,मुझे सद्मार्ग दिखाने वाले.... कभी लगता है कि केवल एक बार पापा से मुलाकात हो जाए,तो जिंदगी का स्वप्न पूर्ण हो जाए,लेकिन सत्य यह है,कि ऐसा सोचना ही मिथ्या स्वप्न है। गरुण पुराण सुनने के बाद मन में बहुत से प्रश्न आते हैं,जिनका समाधान कोई नहीं कर सकता। ईश्वर से बस यही प्रार्थना है, कि पापा को हर तरह से खुश रखे,ठीक वैसे ही, जैसे उन्होंने अपनी जिंदगी में हर प्राणी को रखा है,अगले जन्म में भी में भी मेरे पापा...मेरे पापा के रूप में मुझे मिलें ऐसी कामना नितप्रति करती हूँ। हर क्षण याद आते हो पापा.........जाने वो कौन सा देश ..जहाँ आप चले गए। (र.क्र. 936)

मेरी ''माँ'' श्रीमती कांति देवी

- श्रीमती क्षमा चतुर्वेदी, मुरैना/ग्वालियर

'माँ', 'मम्मी' या वर्तमान 'मोम' एक ऐसा शब्द है जो हमारी अन्तरात्मा तक सीधा पहुँचता है। आज मैं अपनी माँ की प्रथम पुण्यतिथि पर उनके जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं को आपसे साझा कर रही हूँ। मेरी मम्मी श्रीमती कांति देवी का जन्म सन् 1942 में स्व.श्री जगन्नाथ प्रसाद (जगनी गार्ड साहब) के यहाँ बरेली (उ.प्र.) में सबसे छोटी संतान के रूप में हुआ। स्वाभाविक रूप से वो सबकी बहुत लाड़ली थी। उनका विवाह मेरे पापा श्री त्रिलोकीनाथ जी (चंदवार/ग्वालियर) के साथ संपन्न हुआ। विवाह के बाद मम्मी चंदवार/फिरोजाबाद आ गई। अपने परिवार की सबसे छोटी लाड़ली बेटी एक ऐसी जगह आ गई, जहाँ उन दिनों लाइट भी नहीं थी और ना ही कोई काम करने वाली बाई थी। उन्हें जूने से बर्तन साफ करने पड़ते थे जो कि चूल्हे पर चढे.होते थे। पर उस समय लड़कियों को शिकायत करने का कोई अधिकार ही नही था। मेरे पापा की प्रथम नियुक्ति 'देवास' (म.प्र.) में थी, जो फिरोजाबाद से बहुत दूर भी था। पापा ने बाद में अपना तबादला 'मुरैना' करवा लिया। हम छः भाई बहन हैं। परिवार में 5 बेटियाँ और एक बेटे के साथ मम्मी का जीवन सुखद बीत रहा था। उस जमाने में लड़कियों को ज्यादा पढ़ाया नहीं जाता था। पर हमारी मम्मी की जिद थी, कि वो अपनी सारी लड़कियों को अपने पैरों पर जरूर खड़ा करेंगी। उनकी इसी जिद के कारण ही हम सभी भाई बहन आगें पढ़ते गए, बढ़ते गए। सभी बहनों ने पोस्ट ग्रेजुएशन और बी. एड. की डिग्री हासिल की और खूब नाम कमाया। मम्मी अपने बच्चों पर बहुत गर्व महसूस करती थी। समय बीतने पर सभी की शादी अच्छे घरों में हो गई और सभी वहाँ जाकर अपनी-अपनी जिम्मेदारी का निर्वाहन कर रहीं हैं। भाई अजय कुमार स्टेशन मास्टर, ग्वालियर अपने खुद के निवास में परिवार के साथ आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा हैं। मैं अपनी मम्मी के बारे में जब सोचती हूँ तो ऐसा लगता है कि उनका जीवन कितना निश्चिंत व शान्त था। इतना बड़ा परिवार होने पर भी बहुत ज्यादा सोच-विचार करना उनकी आदत में नहीं था। कहावतों का उन्हें इतना ज्ञान था कि कोई भी बात बिना कहावत के पूरी नहीं होती थी। मेरी मम्मी का अंग्रेजी भाषा और उसका उच्चारण बहुत अच्छा था। पढ़ना उनकी आदत थी। जब उनका विवाह हुआ था उस समय वह 10वीं उत्तीर्ण थी परन्तु पढ़ने की जिद के कारण उन्होने कई वर्षों बाद हायर सैकेण्डरी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उनकी नौकरी करने की बहुत इच्छा थी। पर पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्रथम मानते हुए उन्हें मन मारना पड़ा। वो इस बात से बहुत खुश थीं कि उनकी सारी बेटियाँ नौकरी कर अपने पैरों पर खड़ी थीं। समय बीतता चला गया, अचानक सन 1992 में मेरे पापा को 'ब्रेन हेमरेज' और 'पैरालेसिस' का 'अटैक' पड़ा अब मम्मी की जिम्मेदारी और बढ़ गई। हालांकि पापा अपना सारा काम स्वयं कर लेते थे, और मेरा भाई वो तो श्रवण कुमार की तरह से पापा की सेवा में लगा रहता है, पर मम्मी को लगता था कि उनके बिना पापा का काम कोई काम कर ही नहीं पाएगा। अचानक पिछले वर्ष 11 मई 2021 की वह सुबह जब मम्मी उठी ही नहीं। अचानक मम्मी को क्या हुआ? पापा, भाई, भाभी सभी आवाज दे रहे थे पर मम्मी तो शायद सभी से मुख मोड़ चुकी थी। आनन-फानन में डॉक्टर को बुलाया। उसने बताया कि उन्हें साइलेंट अटैक पड़ा है और वो अब इस दुनिया में नहीं हैं। सुबह-सुबह मेरी भाभी का रूँधे गले से फोन आया कि दीदी, मम्मी उठ नहीं रही हैं, मेरे पैंरो तले जमीन खिसक गई। मैंने कहा तुम क्या कह रही हो, मम्मी को आवाज दो, हिलाओ पर कुछ नहीं.......... एक घंटे में मैं मुरैना से ग्वालियर पहुँच गई। भाई हक्का-बक्का सा कह रहा था कि दीदी मम्मी को क्या हुआ? वो क्यों रूठ गई? उन्होंने अपनी सेवा क्यों नही करवाई? मेरे पास इन सब प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था। हम ईश्वर की इच्छा के आगे हार चुके थे। उस समय 'कोरोना काल' चल रहा था। सभी बहनें अपने-अपने घरों मे बंद दहाड़े मार रही थीं, पर मम्मी के अंतिम दर्शन नहीं कर पाई। पता ही नही चला, कब एक साल निकल गया। शायद ही कोई दिन ऐसा गया हो कि जिस दिन मम्मी की याद न आई हो। अचानक आँखे नम हो जाती है, मन कही खो जाता है। अंत में मैं अपने सभी भाई बहनों की ओर से जीवन की अमूल्य धरोहर 'मम्मी' को उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर अश्रुपूर्ण श्रद्वांजली अर्पित करती हूँ। (र.क्र. 928)

संवत् २०७९ शकः १९४४ सन् २०२२-२०२३

भारतीय पर्व, व्रतोपवास एवं राष्ट्रीय पर्व

२	अप्रैल	शनौ	वासन्त नवरात्रारंभ, गुड़ी पड़वा
४	,,	चन्द्रे	गणगौर ३ व्रतं, सौभाग्य सुन्दरी
९	,,	शनौ	श्री दुर्गाष्टमी व्रतं, तारा ८, अशोकाष्टमी
१०	,,	रवौ	श्री राम नवमी व्रतं, महानवमी
१४	,,	गुरौ	श्री महावीर जयंती (जैन), वैशाखी अम्बेडकर जयंती
१६	,,	शनौ	श्री हनुमान प्रकटोत्सव, वैशाख स्नान दान व्रत नियमादि प्रारम्भ
३	मई	भौमे	श्री परशुराम प्रकटोत्सव, अक्षय तृतीया
८	,,	रवौ	श्री गंगा सप्तमी, गंगा जन्म
१०	,,	भौमे	श्री जानकी नवमी, जानकी महोत्सव
१४	,,	शनौ	नृसिंह चतुर्दशी, नृसिंह अवतार
१६	,,	चन्द्रे	बुद्ध पूर्णिमा, महर्षि भृगु जयंती
२५	,,	बुधे	नवतपा प्रारंभ
३०	,,	चन्द्रे	वटसावित्री व्रत, शनि जयंती
२	जून	गुरौ	रम्भा तीज, नवतपा समाप्त
९	,,	गुरौ	गंगा दशहरा, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दिनं
१०	,,	शुक्रे	निर्जला (भीम सेनी) एकादशी
१४	,,	भौमे	दक्षिणी वटसावित्री व्रत, वट पूर्णिमा
२८	,,	भौमे	हल हारिणी आषाढ़ी अमावस्या
१	जुलाई	शुक्रे	रथ यात्रा, जगदीश यात्रा
८	,,	शुक्रे	भड़ली नवमी
१०	,,	रवौ	देवशयनी (हरिशयनी) एकादशी
१३	,,	बुधे	गुरु पूर्णिमा, कोकिला व्रतारम्भ
१४	,,	गुरौ	पार्थिव शिव पूजन प्रारम्भ
१८	,,	चन्द्रे	मौना पंचमी, मधु श्रावणी व्रतारम्भ
२८	,,	गुरौ	हरियाली अमावस्या, जोड़ी दीप पूजा
३१	,,	रवौ	मधुश्रवा तीज, झूला प्रारम्भ
२	अगस्त	भौमे	नाग पंचमी, तक्षक पूजा
४	,,	गुरौ	इन्द्र सप्तमी, गोस्वामी तुलसीदास जयंती
११	,,	गुरौ	रक्षा बन्धन, श्रावणी उपाकर्म
१२	,,	शुक्रे	संस्कृत दिवस
१४	,,	रवौ	कज्जली (कजरी) ३ व्रतं, गौ पूजा
१५	,,	चन्द्रे	स्वतंत्रता दिवस, श्री गणेश चतुर्थी, बहुला चौथ व्रतं
१७	,,	बुधे	हलषष्ठी व्रतं, हरछठ, ललही छठ
१९	,,	शुक्रे	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रतं, कृष्ण जन्म
२५	,,	गुरौ	अघोर चतुर्दशी
२७	,,	शनौ	कुशोत्पाटिनी अमावस्या, पोला-पिठौरा
३०	,,	भौमे	हरितालिका तीज
३१	,,	बुधे	श्रीवरद्, गणेश चतुर्थी, चन्द्र चौथ व्रतं
१	सितम्बर	गुरौ	ऋषि पंचमी व्रतं
२	,,	शुक्रे	सूर्य षष्ठी, लोर्लाक षष्ठी, मोरियायि छठ
३	,,	शनौ	संतान सप्तमी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ
६	,,	भौमे	पद्मा एकादशी व्रतं, डोल ग्यारस
७	,,	बुधे	वामन अवतार, श्रवण द्वादशी
९	,,	शुक्रे	अनन्त चतुर्दशी, श्री गणेश विसर्जन
१०	,,	शनौ	पितृ तर्पण प्रारंभ, महालयारंभ
१७	,,	शनौ	महालक्ष्मी व्रतं, विश्वकर्मा पूजन
१८	,,	रवौ	जीवत्पुत्रिका ८ व्रतं
२५	,,	रवौ	पितृ मोक्ष अमावस्या, पितृ विसर्जन
२६	,,	चन्द्रे	शरदीय नवरात्रारंभ, कलश स्थापना
२	अक्टूबर	रवौ	सरस्वती आवाहन, महा निशा पूजा, गांधी जयंती, शास्त्री जयंती
३	,,	चन्द्रे	श्री दुर्गाष्टमी व्रतं, महा अष्टमी
४	,,	भौमे	श्री दुर्गा नवमी व्रतं, जवारे विसर्जन
५	,,	बुधे	विजया दशमी, दशहरा, देवी विसर्जन
९	,,	रवौ	शरद पूर्णिमा, कोजागरी पूर्णिमा व्रतं
१३	,,	गुरौ	करवा (करक) चौथ व्रतं
१७	,,	चन्द्रे	अहोई अष्टमी
२२	,,	शनौ	धन त्रयोदशी, धन तेरस
२३	,,	रवौ	धन्वन्तरी जयंती, नरक चतुर्दशी,
२४	,,	चन्द्रे	दीपावली, महालक्ष्मी पूजा
२५	,,	भौमे	खण्ड सूर्य ग्रहण, श्री महावीर निर्वाणोत्सव (जैन)
२६	,,	बुधे	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा
२७	,,	गुरौ	भातृ द्वितीया, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा
३०	,,	रवौ	श्री सूर्य षष्ठी, डाला छठ, छठ पूजा
२	नवम्बर	बुधे	आंवला (अक्षय) नवमी व्रतं
४	,,	शुक्रे	देव उठनी एकादशी व्रतं, तुलसी विवाह
६	,,	रवौ	बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रतं
८	,,	भौमे	कार्तिकी पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती, खग्रास चन्द्र ग्रहण
१६	,,	बुधे	श्री काल भैरवाष्टमी
२८	,,	चन्द्रे	श्री पंचमी, नाग दिवाली, विवाह पंचमी
४	दिसम्बर	रवौ	मोक्षदा एकादशी, गीता जयंती
७	,,	बुधे	दत्तात्रेय जयंती
२५	,,	रवौ	क्रिसमस डे
१४	जनवरी	शनौ	मकर संक्रान्ति, खर मास समाप्त
१५	,,	रवौ	संक्रान्ति पुण्यकाल
१९	,,	गुरौ	तिल द्वादशी, तिल उत्पत्ति
२१	,,	शनौ	मौनी अमावस्या, विधि पूजन
२५	,,	बुधे	तिल चतुर्थी, कुन्द ४, दुण्डि पूजन
२६	,,	गुरौ	बसन्त पंचमी, सरस्वती जयंती, भारतीय गणतंत्र दिवस
२८	,,	शनौ	अचला सप्तमी, नर्मदा जयंती
५	फरवरी	रवौ	माघी पूर्णिमा, संत रविदास जयंती
१८	,,	शनौ	महाशिव रात्रि व्रतं, वैद्यनाथ जयंती
२७	,,	चन्द्रे	होलाष्टक प्रारम्भ
३	मार्च	शुक्रे	आमलकी ११ व्रतं, रंगभरी एकादशी
७	,,	भौमे	होलिका दहन (प्रदोष काले)
८	,,	बुधे	होली, धुरेड़ी, बसन्तोत्सव
१२	,,	रवौ	रंग पंचमी
२१	,,	भौमे	वर्ष समाप्ति

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि

शत्–शत् नमन

स्व. महेश चन्द्र चतुर्वेदी
करहल/आगरा

स्व. दिव्यांशी चतुर्वेदी
(भव्या)
(प्रथम पुण्यतिथि)
17.04.2022

स्व. पार्वती चतुर्वेदी
इटावा/आगरा

" हम तुम्हें यूँ भुला न पाएंगे "

शोक संतप्त परिवार

दीपक चतुर्वेदी (पिता) राखी चतुर्वेदी (माँ)
श्रीमती रेनू, नीलम, प्रीती (बुआ जी)
डा0 राकेश चतुर्वेदी, चेतन चतुर्वेदी (फूफा जी)
सत्यम, शिवम, हर्षित (भाई)
अनुष्का, अयाना (बहिन)

29 कबीर नगर, दयाल बाग आगरा
मो0 9897749948, 9837266570

(र.क्र. 942)

शाखा समाचार

दिल्ली

दिनाँक १३ मार्च २०२२ को दिल्ली के खान मार्किट कम्युनिटी

हॉल में दिल्ली सभा दिल्ली के होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सभी परिवार बच्चों एवं बुजुर्गों के साथ समय से पूर्व ही एकत्रित होना आरम्भ हो गए थे। स्वल्पाहार के उपरांत सभा के सभापति महेश जी ने बँधुओं का स्वागत किया। जिसके बाद नोएडा के मशहूर बाल कलाकार ईशा एवं आकर्ष चतुर्वेदी ने अपने सुमधुर स्वर में गणेश वंदना के बाद होलियों का गायन किया। जिसमें उन्होंने मेरी मानो या मानो इत्यादि रचनाएँ जो उन्होंने अपनी दादी श्रीमती संध्या जी से सीखी हैं, सुनाई। इसके बाद लिली मोहन जी, अनीता जी, पल्लवी जी, सौम्या जी, शिवानी जी, कनक जी, विनीता जी, डॉ. ऋचा, अचला जी, रूपम जी, अनुपमा जी, रूचि जी एवं डॉ.प्रतिभा जी ने होली गायन किया। सभी ने सधे हुए सुरों और भावपूर्ण प्रस्तुतियां दी। फिर सभापति श्री महेश चंद जी ने श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में शताब्दी स्मृति चिन्ह का महासभा के सभापति डॉ प्रदीप चतुर्वेदी को भेंट किया। इस अवसर पर डॉ प्रदीप ने बताया कैसे महासभा अपने सौ वर्षों यात्रा में समाज को एक सूत्र में जोड़े रख कर आज की पीढ़ी के समक्ष एक वट वृक्ष की भांति परम्पराओं और स्मृतियों को संजोकर एक जीवित संस्था के रूप में उपस्थित है। अपनी महत्वाकांक्षी गुल्लक योजना के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि छोटा ही सही पर एक नियमित अंशदान महासभा के द्वारा चलाये जा रहे सहायता प्रकल्पों में कैसे एक बड़ी नदी का रूप ले कर सबको तृप्त कर सकता है। उपस्थित सभी बांधवों को अपने साथ एक गुल्लक ले जा कर अपने पूजा घर में रख कर परिवार में हर्ष के उत्सवों पर महासभा को भी उस हर्ष का भागी बनाने को प्रेरित किया। समाज के बान्धवों को उनकी समाज सेवा के लिए स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस क्रम में डॉ.के.एन. चतुर्वेदी (फरीदाबाद), ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (दिल्ली), दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष, अनिल चतुर्वेदी (इटावा), अलोक चतुर्वेदी (गुडगाँव), पूर्व अध्यक्ष शाखा सभा, ऋषि चतुर्वेदी (तरसोखर), प्रदीप चतुर्वेदी (होलीपुरा), कर्नल अलोक चतुर्वेदी (मैनपुरी), ईशा और आकर्ष चतुर्वेदी को इतनी कम आयु में संगीत के क्षेत्र में योगदान, समर्थ सोती और सुदक्ष सोती (मैनपुरी) को उत्कृष्ट होली गायन के लिए, अभय राज जी (गुड़गांव), अनीता जी एवं लिली जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

बाद में श्री महेश चंद जी ने दिल्ली शाखा सभा की ओर से श्री त्रिभुवन जी चतुर्वेदी (होलीपुरा) को स्मृति चिन्ह दे कर सम्मानित किया। अशोक जी, मनीष जी एवं सुशील जी को भी होली गायन की परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान के लिये सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में कार्यकारिणी के सदस्यों लोकेन्द्र नाथ जी, अश्विनी जी, कौशल जी, अभिषेक जी, अतुल जी, शिशिर जी, पल्लवी जी, मनीष जी, दिवाकर जी , प्रशांत जी एवं मुकेश जी ने भोजन की व्यवस्था सुचारू रूप से व्यवस्थित करके सभी सम्मानित बांधवों का सत्कार किया।

– **लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** सचिव

गाजियाबाद

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, गाजियाबाद की कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 25/3/22 को श्री धर्मेंद्र चतुर्वेदी, अध्यक्ष के निवास पर आयोजित की गई। तदुपरांत होली मिलन की कार्यक्रम की रूपरेखा श्री राकेश जी द्वारा प्रस्तुत की गई। जिसका अनुमोदन सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने किया। उसके पश्चात श्री मणी जी कोषाध्यक्ष में खर्चे का ब्यौरा प्रस्तुत किया। इसके बाद होली मिलन के कार्यक्रम पर चर्चा हुई। जिसकी तारीख दिनाँक 13 मार्च 2021 तय की गई। बैठक के अंत में सभी ने उत्तम व्यवस्था का आयोजन हेतु अध्यक्ष जी का आभार प्रकट किया तथा सभा का समापन हुआ।

– **राकेश चतुर्वेदी,** सचिव

गाजियाबाद

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा गाजियाबाद का होली मिलन समारोह दिनांक 13 मार्च 2022 को पाइप मार्केट कम्युनिटी हॉल, आराधना सिनेमा के पास, साहिबाबाद में प्रातः 10:00 बजे से 4:00 बजे तक बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। पूर्व अध्यक्ष श्री विनोद जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। तत्पश्चात नए आए हुए सदस्यों का अध्यक्ष श्री धर्मेंद्र जी द्वारा माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया, जिसमें विमल पांडे, विकास जी एवं अनामिका जी। इसके उपरांत सर्वश्री प्रद्युम्न जी, गोपाल जी, नूतन जी, मुकेश जी, तरुण जी, विकास जी, लोकेन्द्र जी, प्रदीप संजू जी तथा रीना जी ज्योत्सना जी, मोनिका जी, कविता जी एवं समस्त महिलाओं ने होली गायन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभा के कोऑर्डिनेटर वी.एन. चतुर्वेदी जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। सभी ने धर्मेंद्र जी और उनकी टीम को उनकी उत्तम व्यवस्था व आयोजन के लिए धन्यवाद दिया

– **राकेश चतुर्वेदी,** सचिव

गुड़गाँव

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुडगाँव के नवीन अध्यक्ष का चयन सर्वसम्मति से किया गया। जिसकी औपचारिक घोषणा दिनाँक 6 मार्च 2022 को की गयी। नवीन अध्यक्ष श्री अखिलेश चतुर्वेदी को

अपनी कार्यकारणी बनाने का अधिकार सर्वसम्मति से दिया गया जो कि निम्नलिखित है :–

मार्गदर्शक मंडल : सर्वश्री यतीन्द्र नाथ जी, योगेन्द्र नाथ जी, डा. निशीथ जी, नरेंद्रनाथ जी,संरक्षक–अजय जी, दिशा निर्देशक – पंकज जी, अभय जी, अध्यक्ष – श्री अखिलेश चतुर्वेदी,उपाध्यक्ष – प्रणव जी,सचिव – अभय राज जी, सह–सचिव – नीरज जी,संगठन सचिव – श्री अनुराग जी, नीलकांत जी, कोषाध्यक्ष – मनोज जी,कार्यक्रम संयोजन/महिला प्रकोष्ठ –– श्रीमती शिप्रा जी,श्रीमती नीतिका जी, श्रीमती राखी जी,श्रीमती पूनम जी, सदस्य – डा.शरद जी, देवेन्द्र जी, सुभाष जी, अनिल जी, प्रफुल्ल जी, पंकज जी, राहुल चौबे जी, गौरव जी, अंकित जी, सुदर्शन जी।

– **अभय राज चतुर्वेदी,** सचिव

पुरा कन्हैरा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा शाताब्दी वर्ष पुरा कन्हैरा होली मिलन समारोह दिनाँक 17 मार्च 2022 को ग्राम पुरा में आयोजित किया गया। 17 मार्च 2022 के होली मिलन समारोह में उपस्थित

डॉ सतीश चतुर्वेदी, संरक्षक भरत चतुर्वेदी , डॉ प्रदीप चतुर्वेदी (महासभा अध्यक्ष), महेश चंद जी (कोषाध्यक्ष), महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष उषा जी, श्रीमती आभा चतुर्वेदी भूतपूर्व नगर सेविका (नागपुर) महासभा सह सचिव भरत चंद जी रिसड़ा, शशांक जी (संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका), ज्ञानेंद्र जी सहित चतुर्वेदी महासभा के पदाधिकारियों का सत्कार व स्मृति चिन्ह पूरा कन्हैरा चतुर्वेदी समाज के द्वारा किया गया तथा चतुर्वेदी महासभा द्वारा श्री सतीश चतुर्वेदी , भरत जी, डॉ प्रदीप जी इन्होंने होली गायन एवं वादन करने वाले हेमंत जी,श्री ज्ञानेश जी, चंद्रकांत जी (पुरा कन्हैरा), श्री राकेश जी, अशोक जी, मनीष जी (होलीपुरा), गोकरण नाथ जी , प्रवेश जी (तालगांव), को स्मृति

चिन्ह देकर सम्मानित किया गया । श्री सौरभ (आशू) पुरा कन्हैरा को सामाजिक कार्यो के लिए सम्मानित किया गया । इस कार्यक्रम में सरजू प्रसादजी, देवेंद्र नाथ जी, नागेन्द्र नाथ जी, मनोज कुमार जी, भुवनेश कुमारजी, सुभाष जी, विशाल जी (दानपुर), बृजकिशोर जी कोलकाता, शैलेन्द्रजी, मनोज जी, मनीष जी, वीरेंद्र जी, डॉ. अरविंद जी , पंकज जी, मधुर जी, नीरज जी, रमेश जी, मोहन जी, अचलजी, जितेंद्र जी, अशोक जी, अश्वनी जी, ओमकार जी, हिम्मत जी, गगन जी, पवन जी, हितेष जी, समीर जी, पंकज जी, प्रवेश जी, पीयूष जी, हिमांशु जी, विवेक जी, प्रदीप जी, धर्मेन्द्र जी, भुवन जी, संजय जी, विशाल जी, दीपक जी, अनिल जी, अभिनव जी, अभय जी, चंचल जी, प्रणव जी, तनय जी, अंकित जी, अक्षय जी, निकुंज जी एवं तालगांव से :- श्री कैलाश जी, नरेश जी, अरविंद जी, हरेश जी, भरत जी, वीरेंद्र जी, विनय जी, डॉ प्रवीण जी, मुकेश जी साथ में होलीपुरा से भरत जी (इंदौर) , विमले जी, भुवनजी , विपिन जी, अशोक जी, वीरेंद्र जी, अमित जी, राजू जी, मोनू जी, करुणेश जी, प्रमोद जी, रमेश जी , मधुकर जी, विकास (बाह) संजू जी, मंजू जी, हृदयकान्त जी (पिनाहट),आगरा से प्रदीपजी, रूपमजी , प्रत्युष जी, नावनीतजी, जितेंद्रजी, चंचलजी, पुनीत जी, पदमजी, आशीष जी, आलोक जी।

इस कार्यक्रम में महिलाओं की उपस्थिति श्रीमती बीनजी , रेणुजी, सरिता जी, सविता जी, शुभ्रा जी, रजनी जी, बबली जी, रूपम जी, कंचन जी, कृष्णा जी, शैलो जी, नीता जी , मिली जी, साधना जी , कमलेश जी, रंजना जी, प्रथमाजी , प्रियांशी जी, नीता जी, अंजू जी, क्षमा जी , मनीषा जी, मोनीका जी , नीतू जी , अनुराधा जी , अर्पण जी , अंजलि जी, रेखा जी, रश्मि जी (नीलू), दीपाली जी, नेहा जी, रितिशा जी, देवांशी जी ,मेघा जी, पूनम जी, मोनूजी, रानू जी, शिप्रा जी, नुपुर जी, अनन्या जी व तालगांव होलीपुरा के समस्त चतुर्वेदी बांधव व महिलाओ एवं बच्चों ने कार्यक्रम का आनन्द लिया। इस कार्यक्रम में भांग, ठंडाई, नाश्ता व सुरुचि भोज का आनंद उठाया। सभी चतुर्वेदी बांधवो ने इस कार्यक्रम में आकर कार्यक्रम को सफल बनाया। इसके लिए पुरा कन्हैरा चतुर्वेदी समाज आपका आभार व्यक्त करता है।

- भुवनेश कुमार चौबे

अहमदाबाद

कोरोना काल के पश्चात दिनाँक 12 मार्च 2022 को सांय आश्रम रोड पर स्थित होटल मेट्रोपोल में पूर्ण उत्साह के साथ होली मिलन समारोह मनाया गया। लगभग दो साल के बाद सभी लोगो ने आत्मीयता से मिलकर अपने बिछड़े बन्धुओं को याद किया तथा अपने खट्टे मीठे अनुभवों को साझा किया। श्रीमती ईला एवं श्रीमती योगिता ने पारंपरिक अंदाज में होली गीतों को गाकर माहौल

को आनंद दायक बनाया। होली के गीत और ठंडाई का सभी ने आनंद लिया और अंत मे रात्रि भोजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। सभी उपस्थित बांधवों श्रीमती व श्री मुकुंद कृष्ण जी, अतुल जी, किंशुक जी, सौम्या जी,आलोक जी एवं हृदय जी द्वारा इस आयोजन के लिए श्री विनय जी, श्री राजीव जी एवं श्री संजय जी से शीघ्र मिलने के वायदे के साथ आभार व्यक्त किया।

- संजय चतुर्वेदी, अध्यक्ष

जा होरी की ज्वालन बैर जरै

- डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

जा होरी की ज्वालन बैर जरै,
अरू प्रीति की धार में भींजै गली।

भेद नहिं कछु लोगन में ,
अस गंध लहै अनुराग कली।।

कोउ न काहु सों द्वेष करै,
बतरात सबै मिलि बैठि भली।

होली को सांचो सुभाव बता,
बृषभानु सुता मुसकाय चली।।

होली संगम

- अचल

तालगांव

होलीपुरा

पुरा

होलीपुरा

बात सन 1999 की है जब होलीपुरा में माटी की पुकार पर 'होली मिलन समिति ' का गठन कर होली के अवसर पर होलीपुरा में दस ग्रामों का अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक होली सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। तब से लेकर आज तक अनवरत होलीपुरा में होली मिलन समिति प्रतिवर्ष होली के अवसर पर चार दिवसीय सम्मेलन आयोजित करती आ रही है। इसी कड़ी में विगत 17 वर्षों से पूर्णिमा के दिन बाबा बंशीधर जी के परिवारी जन गोंदिया से आकर होलीपुरा, पुरा एवं तालगांव का पुरा में सम्मेलन आयोजित करते हैं। दौज के दिन होलीपुरा तथा तीज के दिन तालगांव में तीनों गांवो का होली सम्मेलन इसी कड़ी का अहम अंग है।

इस वर्ष होली के अवसर पर महासभा शताब्दी वर्ष के उपलब्ध में17/03/2022 को अपरान्ह दो बजे से पुरा में सामूहिक होली गायन का कार्यक्रम माथुर चतुर्वेदी महासभा शताब्दी वर्ष में पुरा कन्हैरा होली मिलन समारोह के रूप में आरम्भ हुआ। जिसके मध्य में पालागन का सम्बोधन एवं पकौड़ी व ठण्डाई का वितरण जारी रहा।सायं सात बजे से विशेष रूप से महासभा शताब्दी वर्ष पर स्वागत एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. सतीश जी संरक्षक, श्री भरत जी संरक्षक, श्री त्रिभुवन नाथ जी संरक्षक, श्रीमती ऊषाजी संयोजिका महिला प्रकोष्ठ, श्रीमती आभाजी नागपुर, डा0 प्रदीप जी सभापति, श्री शशांक जी (सम्पादक,चतुर्वेदी चंद्रिका) श्री महेश जी कोषाध्यक्ष, श्री भरत जी सह सचिव एवं श्री ज्ञानेंद्रजी सह सचिव, महासभा का मंचासीन कर सम्मान किया गया। तत्पश्चात सर्वश्री भरत जी (रिषड़ा),

शशांक जी, महेश जी ,ज्ञानेंद्रजी को सामाजिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। होली गायन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले सर्वश्री हेमन्त जी , ज्ञानेश जी, चन्द्रकान्त जी, मनीषजी, राकेशजी, अशोकजी, गोकर्ण जी एवं प्रवेश जी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती ऊषा जी, डा0 प्रदीप जी एवं श्री सतीश जी ने आशीष वचन व्यक्त किए, जबकि श्री देवेन्द्र जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री नगेन्द्र जी एवं श्री भुवनेश जी ने सभी का स्नेहिल सत्कार किया। अन्त में स्वरुचि भोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

पुरा के बाद होलिकादहन कार्यक्रम में अपने अपने ग्रामों में बान्धवगण एकत्रित व सम्मिलित हुए। 18/03/2022 पडवा के दिन प्रातः श्री धीरेन्द्र नाथ जी (कानपुर) के होलीपुरा स्थित आवास आनन्द भवन पर होली गायन की बैठक के साथ रंगोत्सव का आरम्भ हुआ, जो परम्परागत चौपाई रूप मे सांय तक चलता रहा।

19/03/2022 को होलीपुरा में दौज की बैठक का आयोजन मण्डी में किया गया।विगत पन्द्रह सोलह दशक से स्व0 परशुराम जी बाद उनके पुत्र स्व0 कुन्दन लाल जी तथा वर्तमान में उनके पौत्र डा0 प्रदीप जी द्वारा अनवरत आयोजित की जा रही है। जिसमें पुरा, तालगांव एवं होलीपुरा के बान्धव सम्मिलित होते है। खचाखच भरे भव्य पण्डाल में ढोलक की थाप पर होली गायन के स्वर जब गुन्जायमान हो उठे। जिसे देख विदेशी सैलानी भी मन्त्र मुग्ध हो उठे। बीच बीच में श्री विपिन जी द्वारा केवड़ा जल का छिडकाव सुखद अनुभूति कराता रहा। इस बार दौज की बैठक में डॉ. सतीश चन्द्र जी एवं त्रिभुवन नाथ जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। आयोजन को सफल बनाने में श्री नवीन चन्द्र

जी, श्री कौशल जी ,श्री करूणेश जी, श्रीमती सुधाजी, श्रीमती अनुपमा जी एवं कु. श्रेया ने अहम भूमिका अदा की। दिलखुशाल,समौसा एवं ठण्डाई वितरण के बाद सभी बान्धव होलीपुरा मे ही शिव जी के मन्दिर में आयोजित बैठक मे सम्मिलित हुए। जहाँ ठण्डाई वितरण के साथ एक ओर होली की बैठक तथा दूसरी ओर टेबल चेयर पर बैठाकर भोजन की व्यवस्था चल रही थी।इन सबके मध्य डॉ. सतीश चन्द्र जी एवं श्री त्रिभुवन नाथ जी,अजय जी मलेपुर, भरत जी भोपाल एवं बडी संख्या में महिलाओ की उपस्तिथी का विहंगम दृश्य अनुपम छटा बिखेर रहा था। इस बार श्रीमती आभा जी के आमन्त्रण पर महिलाओं की उपस्थिति भी उत्साह वर्द्ध क रही तथा डा0 सतीश चन्द्र जी के होलीपुरा स्थित आवास पर महिलाओ की पृथक रूप से होली गायन की बैठक का आयोजन ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए।

20/03/2022 को तालगांव में त्रिग्रामी होली गायन की बैठक में डॉ. सतीश चन्द्रजी नागपुर, श्री देवेन्द्र नाथ जी गोंदिया, श्री धीरेन्द्रनाथ जी कानपुर इत्यादि सहित बडी संख्या में बान्धव उपस्तिथ हुए। पम्परागत खीर, झोर व भात के भोजनोपरान्त इस वर्ष का चार दिवसीय तीनों ग्रामों का सम्मिलित रंगारंग होली सम्मेलन सुसम्पन्न हुआ।

कुल मिलाकर डेढ़ – दो दशक से आयोजित हो रहे चार दिवसीय सम्मेलन ने पुरा, होलीपुरा एवं तालगाँव के बान्धवों के मध्य आपसी भाईचारे, उत्साह एवं उमंग का संचार किया है। वही ग्रामोत्थान के रूप में पूर्वजों की हवेलियों में नित नये हो रहे निर्माण सफलता का प्रमाण हैं जिन्हें देखकर कहा जा सकता है कि हमारे गाँव उजड़ नही रहे है (दो दशक पूर्व की स्थिति), बल्कि आधुनिक सुख सुविधा से युक्त हो बस रहे है। इसके साथ युवा कलाकारों द्वारा होली गायन वादन में बढ़ चढ़कर भाग लेते देख हम कह सकते है कि हमारी धरोहर सबल एवं सुरक्षित है।

समाज समाचार

- सुश्री रितिका चतुर्वेदी सुपुत्री श्री रमन चतुर्वेदी (पारना/लखनऊ) के आई. डी. बी. आई. बैंक में मैनेजर पद पर पदोन्नति प्राप्त की। इस शुभ अवसर पर रमन जी द्वारा पत्रिका सहायतार्थ 2100/– रुपये प्रदान किए। बधाई। (र.क्र. – 889)
- भारत सरकार द्वारा ' विज्ञान सर्वत्र पूज्यते' कार्यक्रम के अन्तर्गत विज्ञान सप्ताह में विज्ञान की हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों हेतु साहित्य संगम प्रयाग प्रयागराज के प्रकाशक आलोक चतुर्वेदी को पूर्व कुलपति डॉ एच.पी.तिवारी विज्ञान परिषद प्रयाग में सम्मानित करते हुए। बधाई

- स्व. श्रीमती आभा चतुर्वेदी, अब्बो (जहांगीरपुर/कोलकाता) की स्मृति में श्री रामेश्वर चतुर्वेदी द्वारा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 2100/– रुपये प्रदान किए। (र.क्र.– 931)
- श्रीमती नर्वदा चतुर्वेदी (होलीपुरा) द्वारा अपने पति स्व. वीर बहादुर चतुर्वेदी की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 24000/– रुपये प्रदान किए। (र.क्र.– 932)
- स्व० सौमित्र चतुर्वेदी (छोटू) (फतेहगढ़/इटावा) की नौवीं पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी पत्नी श्रीमती अनिंदिता सौमित्र चतुर्वेदी द्वारा 12,000 रुपये अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ प्रदान किए गए। (र.क्र. – 934)
- श्री अखिलेश चतुर्वेदी (सिकंदरपुर/ लखनऊ) ने अपने जन्म दिवस के शुभ अवसर पर महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 2100/– प्रदान किये। (र.क्र. – 890)
- चि. सारांश पुत्र श्री राजीव चौबे (फरौली/ग्वालियर) की नियुक्ति सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर जेंसर टेक्नोलॉजी पुणे में एक वर्ष पूर्ण होने पर बधाई। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 1001/– प्रदान किये। (र.क्र. – 939)
- सुश्री सुरभि चौबे सुपुत्री श्री राजीव चौबे (फरौली/ग्वालियर) की नियुक्ति लीड इनकॉरपोरेशन एंड टैक्सेशन के पद पर टेक्स साइन अप कंपनी, भोपाल में हुई है। बधाई।
- कु. आयुषी सुपुत्री डॉ. मीनाक्ष व डॉ. अंजना चतुर्वेदी ने एमबीबीएस की पढ़ाई 70% अंकों के साथ जबलपुर मेडिकल यूनिवर्सिटी से पास की। साथ ही आयुषी ने गायनी व ऑब्सट्रेटिक्स में ऑनर्स लाने पर मेडिकल कॉलेज द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आपने अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 2500/– प्रदान किये। बधाई। (र.क्र. – 923)
- चि. वरुण सुपुत्र डॉ. मीनाक्ष व डॉ. अंजना चतुर्वेदी (भोपाल) ने सन 2019 में यू.पी.एस.सी. सिविल सर्विसेज (भारतीय प्रशासनिक सेवा) में चयनित होकर रेलवे में (आई.आर.पी.एस.) ज्वाइन की। वरुण जीमेट में 740/800 अंक प्राप्त किए। साथ ही सी.एफ.ए. लेवल –1 पास की। इस अवसर पर आपने अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ रूपए 2500/– प्रदान किए। बधाई। (र.क्र. – 923)

- 15 जनवरी 2022 को थलसेना दिवस के दिन महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन मिलने पर जनरल एम. एम. नरवणे ने चार डाक टिकट जारी किए। जिसमें से एक पर मेजर अदिति मिश्रा पुत्री श्री किशोर कुमार मिश्रा (कानपुर) की राइफल के साथ निशाना लगाते हुए एकल फोटो छपी है।संभवतः चतुर्वेदी समाज की आप पहली शख्शियत है, जिसने ये स्थान अर्जित किया है। बधाई।

- श्री प्रणव चतुर्वेदी (मैंनपुरी/कानपुर) को चतुर्वेदी लग्न बैंक के अंतर्गत उनकी सेवाओं के लिए दिनाँक 20 मार्च 2022 को मैनपुरी होली मिलन कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। बधाई।

- दिनांक 6 मार्च, 2022 को गुरुग्राम सभा ने प्रख्यात कवि, साहित्यकार, विचारक धर्मेश चतुर्वेदी जी (मैनपुरी/दिल्ली) को समाज की बहुमूल्य धरोहर होली गायन को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए एवं होलियो को संरक्षित करने के लिए उनके उल्लेखनीय योगदान को रेखांकित करते हुए समाजरत्न सम्मान से अलंकृत किया गया। आपके अनेको कार्यक्रम देश में संचालित हो चुके हैं। बधाई।

शोक समाचार

* श्री कौशल चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री डाल चंद्र जी (कमतरी/सूरत) का स्वर्गवास मुंबई में दिनाँक 23/02/2022 को हो गया।

* श्री भरत चतुर्वेदी (तरसोखर/कोलकाता) का स्वर्गवास दिनाँक 24 फरवरी 2022 को कोलकाता में हो गया।

* श्री प्रशांत चतुर्वेदी (रामू) पुत्र स्व० देवेंद्रनाथ चतुर्वेदी जी (करहल/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 01/03/2022 को कानपुर में हो गया।

* श्री प्रशांत चतुर्वेदी (रामू) पुत्र स्व० देवेंद्रनाथ चतुर्वेदी जी (करहल/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 01/03/2022 को कानपुर में हो गया।

* श्रीमती सीमा चतुर्वेदी पत्नी श्री रुपक चतुर्वेदी (कमतरी/प्रयागराज/गाजियाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 12 मार्च 2022 को लगभग 55 वर्ष की आयु में हो गया।

* कमांडर विजय चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री मदन मोहन चतुर्वेदी (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवम गांधीजी के सहयोगी) (मैनपुरी/दिल्ली) का स्वर्गवास दिनाँक 12/03/2022 को दिल्ली में हो गया।

* श्री सुरेन्द्र कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/ लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 13/03/2022 को 79 वर्ष की आयु में लखनऊ में हो गया।

* श्री नरेंद्र कुमार चतुर्वेदी का स्वर्गवास दिनाँक 22 मार्च 2022 को हो गया।

* श्रीमती प्रिया चतुर्वेदी पत्नी स्व.श्री पंकज चतुर्वेदी पुत्रवधु स्व. श्री गिरिराज कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/ज्वालापुर,हरिद्वार) का स्वर्गवास दिनाँक 19/3/2022 को ज्वालापुर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

अश्रुपूर्ण स्मरण एवं स्नेहांजली

सौमित्र चतुर्वेदी (छोटू)

जन्मः 15 अप्रैल 1982
स्वर्गवासः 11 अप्रैल 2013

उचित उदार उषा की अरुणिम कान्ति रुचिर है
आप्लावित कर अखिल गगन को, निखिल भुवन को,
अमल अमृत झर रहा तुम्हारा अविरल है

गहन शोकाकुल व मर्माहत

पत्नी	:	अनिंदिता चतुर्वेदी
पिता–माता	:	श्री राजेन्द्रनाथ – मंजु चतुर्वेदी (फतेहगढ़)
बहन–जीजा	:	सौम्या – सौरभ चतुर्वेदी
बाबा	:	रामनाथ जी
चाचा–चाची	:	कमल – रंजू, विनीत – आभा चतुर्वेदी
भाई, भांजियां	:	शुभांक, सुभ्रत, वामिका, मनिष्का चतुर्वेदी

एवं समस्त ददिहाल – ननिहाल परिवार के सदस्य

(र.क्र. 2022/935)

Bharatgas
Bharat Petroleum
COOK FOOD. SERVE LOVE.

कही अर्थ का अनर्थ न हो!

क्यूंकी पृथ्वी हमारा घर है और घर को कभी नष्ट नहीं करते,
आइए विश्व पृथ्वी दिवस पर हम सब सुगम, सुलझ और समृद्ध जीवन का
संकल्प उठायें और हमारी प्यारी सी अर्थ को बचाएं..

> वृक्षरोपण में सहयोग करें।
> जल को बचाने का जतन करें।
> पॉलीथिन छोड़ पर्यावरण से नाता जोड़ें।
> स्वच्छता को अपनाएं, बीमारी को दूर भगाएं।

विश्व पृथ्वी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

रेखा गॅस एजन्सी

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095, 2221195, 2225195, 2228495.
E-mail : rekhagas20032003@rediffmail.com

www.malhar.org

(र.क्र. 2022/915)

Nirmala Construction
COMPANY

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी

गवर्नमेंट रजिस्टर्ड् कांट्रैक्टर

Akshay Choubey

Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech - Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)

Bazariya Ward No.1, Jawalamai Chouraha, Damoh(M.P.) -470661

+91 8770955872
+91 8602266219

- **किसी भी प्रकार की बिल्डिंग, घर, मॉल, कॉम्प्लेक्स, कालोनी के कंस्ट्रक्शन के लिए सेवा का अवसर प्रदान करे। तथा, कंस्ट्रक्शन मशीनर, जेसीबी, फियोरी, पोकलेन, के लिए संपर्क करे!**
- **हमेशा स्नेह और सहयोग देने के लिए माननीय सतीश चतुर्वेदी और आभा चतुर्वेदी (नागपुर) को विशेष धन्यवाद !**

दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे(बगियावाले) , पुत्र - विनोद, देवेंद्र, गजेंद्र, राजेंद्र,स्व. नीरज चौबे।

भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे।

(र.क्र. 2022/851) 3/6

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' अप्रैल 2022

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

।। जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ।।

श्रीराम नवमी की
हार्दिक बधाई

दुष्यंत सतीशचंद्र चतुर्वेदी
विधायक, महाराष्ट्र
सौ. शीतल दुष्यंत चतुर्वेदी
डायरेक्टर,LTJSS

(र.क्र. 2022/746) 6/12